चतुर्थ अध्याय

श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी संघर्ष

<u>प्रस्तावना:--</u>

संघर्ष वह प्रयत्न है जो किसी व्यक्ति या समूह द्वारा शक्ति, हिंसा या प्रतिकार अथवा विरोधपूर्ण किया जाता है। संघर्ष अन्य व्यक्तियों या समूहों के कार्यों में प्रतिरोध उत्पन्न करते हुए बाधक बनता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि ऐसा प्रयत्न जो स्वयं के स्वार्थ के लिए, व्यक्तियों या समूहों कार्यों में बाधा डालने के लिए किया जाता है, वह संघर्ष कहलाता है। इस आधार पर शोधार्थी ने बेचैन जी के नारी पात्रों के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक तथा राजनैतिक संघर्ष को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। इन सभी संघर्षों को प्रस्तुत करने से पूर्व शोधार्थी ने पारिवारिक, सामाजिक,आर्थिक,शैक्षिक तथा राजनैतिक सभी की भूमिका के साथ प्रस्तुत किया है।

<u>पारिवारिक:</u>-

परिवार एक ऐसी संस्था है जो मानव उत्थान के लिए एक शानदार खोज मानी जाती है। प्राचीन लोगों द्वारा मानव जाति के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार माना जाता है। इस संस्था में सभी लोगों का एक साथ परिवार में रहना अपने आप में महत्व रखता है जिसके लिए तमिल भाषा में एक कहावत भी बहुत ही प्रचलित मानी गई है"एक- अच्छा परिवार संयुक्त राष्ट्र की तरह है।"जिसका अपने आप में विशिष्ट अर्थ है।

परिवार एक ऐसे विश्वविद्यालय के समान होता है जिसमें मैत्री संबंध, आत्मविश्वास का निर्माण, सहभागिता, आतिथ्य, प्रेम - संबंध, देखभाल,साख एवं भावात्मक समायोजन आदि जैसे विषयों की शिक्षा दी जाती है। जिससे उसके व्यवहारिक भावों में परिवर्तन आता है तथा वह उन सभी का अनुकरण करता है। इस विश्वविद्यालय में माता-पिता, बुजुर्ग, परिवार एवं समाज आदि को शिक्षक माने जाते हैं।

पश्चिमी अवधारणा के अनुसार परिवार एक संस्था है वहीं हमारी भारतीय अवधारणा यह है कि परिवार एक ऐसा तरीका है जिसके माध्यम से हर व्यक्ति अपना धर्म निभाता है। अर्थात् धर्म सर्वोपरि है और यह

वह रास्ता है जिसमें मानव जाति अपना कर्तव्य निभा सकती है और अपना उद्धार कर सकती है। इस आधुनिक समाज के परिवार में कई समस्याएं उत्पन्न होती रहती हैं और इन सब समस्याओं का निवारण उस परिवार के शिक्षक करते रहते हैं।

परिवार एक ऐसी संस्था है जो ऊपर से एक स्थूल संरचना दिखाई पड़ती है जिसमें कुछ व्यक्ति देशकाल एवं आवश्यकताओं तथा अपनी क्षमताओं को बनाए हुए एक घर में निवास करते हैं। यदि हमें किसी परिवार की परिभाषा निर्धारित करनी हो तो यह उतना स्थूल उपक्रम नहीं है जितना कि प्रतीत होता है इसको परिभाषित करने के लिए कई रूपों को देखना पड़ता है जिसके कारण इसकी सटीक परिभाषा हमें मिल सकती है।

परिवार बाह्य तौर पर यदि स्थूल संगठन है तो उस संघर्ष के स्तर पर इस संगठन के पीछे रक्त संबंध, भावनात्मक संबंध, अपने-पराए का बोध इत्यादि ना जाने कितनी मानवीय संवेदनाएं और वृत्तियां सक्रिय दिखाई पड़ती हैं और एक ही परिवार में रहते हुए उसके सभी सदस्य एक दूसरे को एक समान नहीं चाहते हैं एवं इसी प्रकार कहीं ना कहीं व्यक्ति परिवार के विघटन का एक कारण बन जाती है एवं स्थिति चाहे जो भी हो उसे हम परिवार ही कहते हैं। इसी आधार पर परिवार की कुछ परिभाषाएँ निम्न रूप से है-:

परिभाषा:-१:- स्मिथ के अनुसार- " परिवार साधारण तथा एक विवाह युग्म होता है जिसमें एक पुरुष उसकी पत्नी और छोटे बच्चे सम्मिलित होते हैं-या एक समुचित समूह जिसमें एक पुरुष उसकी पत्नी/पत्नियाँ उसके पुत्र, पौत्रों की पत्नियाँ और पौत्र तथा अविवाहित पुत्रियां सम्मिलित होती हैं।"[1]

परिभाषा:- २:- ' डेविस किंग्सले ' के अनुसार- " परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो रक्त के आधार पर एक दूसरे से संबंधित हैं तथा जो परस्पर नातेदार हैं।"[2]

परिभाषा:-३:- ' इलियट तथा मेरिल ' ने परिवार की परिभाषा इस प्रकार दी है - " परिवार पति-पत्नी और बच्चों से निर्मित एक जैविक सामाजिक इकाई है।"[3]

परिभाषा:-४:- लसी मेयर के अनुसार - " परिवार एक ग्रस्त समूह है जिसमें माता पिता और संतान थे साथसाथ- रहते हैं इसके मूल रूप में दंपति और उसकी संतान रहती है।"[4]

उपर्युक्त परीभाषाओं के साथ - साथ परिवारिक संघर्ष भी अपने आपमें ही स्पष्ट होती चली आ रही है। इस रूप में स्पष्ट हो रहा है कि बच्चों के पालन-पोषण से लेकर उनके व्यक्तित्व के विकास होने तक का संपूर्ण कार्य परिवार द्वारा ही पूर्ण अथवा संपन्न किया जाता है।

परिवार में रहकर ही व्यक्ति सामाजिक व्यवहार एवं नैतिक आचरण की शिक्षा को अपने व्यक्तित्व में उतारता है। इसी वजह से परिवार को व्यक्ति की प्रथम पाठशाला माना जाता है। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि परिवार ही व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए उसके व्यक्तित्व, सोच-विचार, आचार व्यवहार आदि सभी का निर्माण करता है। संचार के विभिन्न भागों में परिवार के स्वरूपों में विविधता दिखाई देती है। इस विविधता का मूल कारण स्थान विशेष की भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ ही है।

भारत में परिवार के अनेक रूप देखे गए हैं जैसे कि पितृ सत्तात्मक रूप मातृ सत्तात्मक रूप, केंद्रीय और संयुक्त परिवार आदि लेकिन इस औद्योगीकरण के युग में परिवार के स्वरूप में काफी तरह के बदलाव देखे जा सकते हैं। समाज में परिवार का जो रूप पहले था उसमें धीरेधीरे- अब पूरी तरह परिवर्तन आ चुका है। सदियों से चलती आ रही यह मान्यताएं अब बिल्कुल लुप्त होती हुई नजर आ रही हैं जहाँ परिवार मैं दादा - दादी, माता-पिता, चाचा- चाची, ताऊ- ताई आदि का परिवारिक प्रेम नजर आता था परंतु आज उसके स्थान पर अब सिर्फ पति-पत्नी एव उनके बच्चे रह गए हैं।

जहाँ पर परिवार संगठित रूप में था। वह आज परिवार एकल रूप में परिवर्तित अर्थात् सीमित हो गया है। इस तरह बदलते परिवारिक परिदृश्य से समाज का रूप बदलता चला जा रहा है जिसमें परिवारिक संघर्ष की कमी आती जा रही है जिसके कारण से बच्चों में संघर्ष का भाव समाप्त होता चला जा रहा है।

"आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में पुराने परिवारिक संबंधों का टूट जाना और परिवारिक चेतना का ह्रास तथा संयुक्त परिवारों का एकल परिवारों में बट जाने की प्रक्रिया ने विघटन ला दिया है। जैसे विवाह संबंध में तलाक, अलगाव, परिवारिक मूल्यों का विघटन ही परिवार के विघटन का मूल कारण है।"[5]

इन पंक्तियों के आधार पर परिवारिक संघर्ष और उसके विघटन को देखा जा सकता है। इस विघटन का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर भी पड़ता है एवं जो भावना और भावनात्मक तत्व दया, प्रेम, सहानुभूति, लगाव आदि

संघर्ष परिवार के विकास द्वारा ही प्राप्त होते हैं और इन्हीं सबका मिलाजुला रूप परिवारिक संघर्ष कहलाता है। यह संघर्ष वहीं ज्यादा मिलता है जहाँ पर संयुक्त परिवार होता है। एकल परिवार में यह संघर्ष इसलिए कम हो जाता है क्योंकि इसमें परिवार के सदस्यों की संख्या कम हो जाती है एवं इसके साथ-साथ प्रेम तथा संघर्ष भी कम हो जाता है।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी की रचनाओं में भी यह परिवारिक संघर्ष देखने को मिल जाता है उनकी आत्मकथाओं से संबंधित रचना हो या कहानियों, कविताओं, निबंधों, आलोचनाओं से संबंधित उनमें कई स्थान पर यह संघर्ष प्रतीत होता रहता है। इनकी कहानियों में अधिकतर एकल परिवार के संघर्ष को व्यक्त किया गया है उनके तीनों कहानी संग्रहों में से प्रत्येक कहानी में परिवारिक संघर्ष दिखाई दे ही जाता है।

शोधार्थी आगे पुष्टि तथ्यों के माध्यम से नारी के पारिवारिक संघर्ष को प्रस्तुत करेगा। जिससे बेचैन जी की आत्मकथा, कविताओं, निबंधों, आलोचनाओं, कहानियों में नारी संघर्ष से पाठक रूबरू हो सकेगा।

सामाजिक संघर्ष:–

सामाजिक संघर्ष तब होता है जब दो या दो से अधिक लोग सामाजिक अंतःक्रिया में एकदूसरे का विरोध करते हैं।- प्रत्येक असंगत लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयास में पारस्परिकता के साथ सामाजिक शक्ति का प्रयोग करते है लेकिन दूसरे को अपना लक्ष्य प्राप्त करने से रोकता है। यह एक सामाजिक संबंध है जिसमें दूसरों के प्रतिरोध के बावजूद अभिनेता की अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए जानबूझकर कार्यवाही की जाती है।

समाज:-

समाज शब्द के व्युत्पत्तिपरक अर्थ को जानना आवश्यक है अर्थात् व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'समाज' शब्द 'सम + अज'[6] के योग से निष्पन्न हुआ है तथा विभिन्न शब्दकोशों में इसका अभिप्राय 'सभा'[7], 'समुच्चय'[8],'बहुत से लोगों का झुंड या गिरोह'[9],'एक जगह पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार का काम करने वाले लोगों या समूह या दल'[10], ' पशुओं से भिन्न लोगों का समूह, किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की गई सभा, सोसाइटी या संघ इत्यादि दिया गया है। समाज के संदर्भ में प्रस्तुत किए गए उपर्युक्त अर्थ समाज की सही कल्पना करने में असमर्थ है बोलचाल की आम भाषा में हम समाज शब्द का प्रयोग जिस अर्थ में करते हैं। समाज का समाजशास्त्रीय अर्थ उससे बहुत ही

भिन्न है इसलिए यह आवश्यक है कि सबसे पहले समाज के सामान्य तथा समाज शास्त्रीय अर्थ को हमें पूर्ण रूप से समझ लेना चाहिए।

-:श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा में नारी का संघर्ष:-

नारी का परिवारिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो आज भी परिवार में निरंतर संघर्ष कर रही है उसी दृष्टि को ध्यान में अपनी दृष्टि केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में पारिवारिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के पारिवारिक संघर्ष की पुष्टि इनके आत्मकथा साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। जिसके उदाहरण इस प्रकार है:-

कलावती बुआ आग्रह कर रही थी, 'मेरे भइया कूँ शहर लै चलौ', पर कोई सुनने वाला नहीं था। उसने कहा था- 'बीधे तेरी नाअक्ली ने मेरो भइया मारि लओ'। जैसे-जैसे समय बढ़ रहा था 'वैसे-वैसे चाचा की हालत बिगड़ती जा रही थी। उन्हें सही और त्वरित उपचार की जरूरत थी। लेकिन सयानों की मण्डली उन्हें शारीरिक रूप से यातनाओं पर यातनाएँ दिये जा रही थी। चाचा को खाट से खींच कर जमीन पर डाल दिया गया था। घर-बाहर के सब लोग यह मान रहे थे कि मारपीट और यातनाएँ 'राधे' को नहीं, बल्कि इसकी देह पर सवार चौराहे वाली को दी जा रही हैं। त्रासद वेदना से लबालब चाचा के आँसुओं की भाषा समझने वाला वहाँ कोई नहीं था। मैं उनका खून था, पर उनकी सहायता करने में अक्षम था।"[11]

अत: यहाँ पर लेखक ने कलावती के माध्यम से पारिवारिक संघर्ष को दर्शाया है जिसमें कलावती बुआ अपने भाई के लिए संघर्ष करती हुई नजर आ रही है जिसके माध्यम से नारी के पारिवारिक संघर्ष की पुष्टि हो जाती है।

"जुनाबई की पैंठ से आने वालों में एक चेहरा चाचा का भी हुआ करता था, वह आज भी होगा। मैं रास्ते पर बैठा हर रोज इन्तजार करता

रहता। आने वाले सब आ चुके होते। दिन कब का ढल गया। अँधेरा होते-होते ढूंढ़ती ढाँढती अम्माँ आ जाती, "तू आज फिर बाप की बाट जोह रओ है। मैं कितनी बेर कह चुकी हूँ बेटा, तेरो बाप मरि चुको, वो अब कबऊ नॉय अबैगो, मरि कें कोई नाँय लौटतु। मौत राम और किशन जैसे भगवानन तक कूँ खाइ गयी। अब तू आज से बेटा अपने पेट की आग खुद बुझाबन की तरकीब सोच, जहाँ जो काम मिलै करि, रूखी-सूखी जहाँ मिलै तहाँ खा, फटो-पुरानों जैसो जो लत्ता-गूदड़ा मिले सो पहन, पर काउ तें कबउँ कछु माँगै मत। याद रखिए तोई बिना मतलब के कोई कछु नाँय देगो।" अम्माँ हिदायतें देती और मैं सुना-अनसुना कर देता। हार कर अम्माँ मेरे गाल पर एक चाँटा मारती और हाथ पकड़ कर खींचती- रोती घर ले जाती। वह रोने में गीत जैसा गाती और सारी व्यथा कह जाती- "का तूनें चिता कूँ आगि नॉय दई?"[12]

इन पंक्तियों द्वारा नारी के पारिवारिक संघर्ष को देखा जा सकता है जिसमें एक मां का अपने पति की मृत्यु हो जाने के पश्चात् अपने बेटे के लिए संघर्ष करती हुई तथा उसको समाज में रह कर संघर्ष करने की हिदायते देती हुई प्रतीत होती है।

"उसी समय की एक घटना है। बहन की बस्ती की जेठानी ऐसी कमजोर स्थिति देख कर आँगन की जगह पर कब्जा करने के इरादे से कुछ दिन से प्रयास कर रही थी। उसके आठ बेटे और एक बेटी थी। उसके पति बल्लेसिंह भी जवान पट्ठे थे उन दिनों। आठ बेटों में 'छै' पैंठों में जूतियाँ गाँठते थे और 'बल्ले' मुर्दा-मवेशी की खालें उतारने का काम करते थे। वैसे वे कभी लड़ते झगड़ते नहीं थे। लेकिन बहन और जेठानी में मामूली जगह को लेकर झगड़ा हुआ। झगड़ा देवरानी-जेठानी का था, परन्तु कमजोर स्थिति में देखकर बल्लेसिंह ने जीजाजी की लाठी उठाकर बहन की पीठ पर दे मारी। जीजा जी बीमार थे ही, गाली के बदले में उनके गले से साँय-साँय की आवाजें निकल रही थीं और मैं लाठी टेक कर भी नहीं चल पा रहा था। 'भज्जन' अपने 'पिता' सियाराम जाट के खेत पर थे। कैसी विवशता थी! हम दोनों बीमारियों से अधमरे से हुए पड़े थे। उस पर बल्ले की वह दिलेरी सामने आयी। वह बहन पर लाठी चला गया, लेकिन मैं देखता रहा। मैंने कहा था- "बल्ले, यह बहादुरी नहीं है। ऐसे में तुम सारा घर भी छीन सकते हो।"[13]

अतः इन पंक्तियों में बेचैन जी ने नारी के पारिवारिक संघर्ष को लेखक की बहन के द्वारा प्रस्तुत अर्थात् दर्शाया है जिसमे लेखक की बहन पर जेठानी से झगड़ा करने पर उसके पति द्वारा अत्याचार होते हुए तथा बहन का अपने हित के लिए संघर्ष करते हुए दर्शाया गया है।

"कृपया मेरा ख्याल अपने मन में मत लाओ सुनकर वह बच्चों की तरह रोने लगी और मैं थैले में स्कूली किताबें डाल कर घर से बाहर हो गया । तीन-चार दिन बाद लौटा तो पता चल गया। चौपाल से घर जाते हुए उसने मेरे हाथ पकड़ लिए और कहने लगी- "इनकार क्यों किया? मुझ में कमी का है? मैं आधा पेट खा कर रह लूँगी, तुम पढ़ना चाहते हो पढ़ते रहना। शहर जानो चाहते हो तो चले जाना। मैं ताई के संग रह लूँगी गाँव में।"[14]

श्यौराज सिंह 'बेचैन' अपनी आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कन्धो पर' में एक स्त्री जो उनसे प्रेम करती है तथा लेखक से विवाह करने के लिए लेखक को मनाती है और उसकी पढ़ाई में बाधा ना बनने को कहती है।

"मेरा काम छूट जाने और ठेकेदार के भाई से पिटने की सूचना अम्मा को मिल गयी थी। शायद छोटे लाल को इधर जनता मार्किट से गुजरते हुए मौसा जी ने बता दिया था। वह भागी-भागी आयी। मौसा जी से आ कर उसने पूछा तो उन्होंने अम्मा को डाँट दिया, "सुनो मुखी तुम इतनी ममता मत दिखाओ। जैसा तुम्हारा बेटा वैसा हमारा। अब यह हमारे साथ है तो इसके काम की व्यवस्था भी हम ही करेंगे। तुम अपने बाकी बच्चे सँभालो ।"[15] माँ की ममता सभी बच्चों में बँटी थी। इधर मैं था, उधर मेरे छोटे भाई थे। बड़ी बहन माया की शादी हो चुकी थी, पर उसके बुलाने पर उससे मिलने जाने को वह प्रायः तड़पती रहती थी। भिकारी का छोटा बेटा तेजसिंह उसकी गोद में था ।

यहाँ पर लेखक ने अपनी आत्मकथा में एक माँ के द्वारा अपने पुत्र के प्रति स्नेह तथा उसको काम करता देख उसको पिटता देखा, उससे रहा नहीं जाता और वह उससे मिलने चली जाती है तथा घर की परिस्थिति खराब होने की वजह से अपने बेटे को काम पर भेजती है और इस तरह पारिवारिक संघर्ष से जूझती रहती है।

नारी का सामाजिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो आज भी समाज में निरंतर सामाजिक संघर्ष कर रही है इसी दृष्टि केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में सामाजिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के समाजिक संघर्ष की पुष्टि इनके आत्मकथा साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। जिसके पुष्टि तथ्य इस प्रकार है:-

'छोटी' बुआ और मानती की ननद की शादी होने वाली थी। मेरे गाँव नदरोली न्यौता आया था। तब बाबूराम ताऊ अंधे थे, गंगी बब्बा और भागीरथ बब्बा दोनों नेत्रहीन थे और विद्याराम बब्बा लंगड़े थे। मेरे पिता और ताऊ इन्हीं के बेटे थे। दोनों बब्बा बन्धुओं के बच्चों की असमय मौत हो चुकी थी। छोटी दादी भी मर चुकी थी और बड़ी दादी ने अपने मायके में शरण ले ली थी। बाकी घर में अम्माँ और ताई के अलावा हाथ-पाँव और आँखों से ठीक-ठाक केवल मेरे पिता राधेश्याम ही थे। इसलिए उन्हीं को भात लेकर इस शादी में जाना था। उन दिनों रिश्तेदारी में शादी-विवाह, तीज-त्योहार आदि अवसरों पर अनुपस्थिति क्षम्य नहीं मानी जाती थी। वैसे भी, एक तो यह नई रिश्तेदारी थी और दूसरे, वहाँ बुआ का घर था ही। इसलिए लड़की वाला होने के नाते बुआ की ननद की शादी में भी भात भरने जाना ही था। गंगासाय ताऊ के घर से उनके पिता 'टुंडी' बब्बा, प्यारे चच्चा और मेरे पिता ने शादी में जाने के लिए कई दिन पहले से तैयारियाँ की थीं। पैंठ से नये कपड़े लाए गये थे। गंगा (नदी) पार करके सीधे रास्ते से जाओ तो बुआ का यह गाँव धुर्रा (प्रेमनगर) लगभग तीस कि.मी. की दूरी पर होगा। उन दिनों गंगा नदी पर नरौरा वाला पुल भी नहीं बना था, इसलिए नाव पर सवार होकर ही गंगा पार जाना-आना होता था।"[16]

प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि श्यौराज सिंह बेचैन जी की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कन्धो परसी में यहाँ छोटी बुआ और मानती की शादी होने वाली थी। यहां सामाजिक संघर्ष से उनको जूझना पड़ रहा था क्योंकि उनकी शादी में भात देना वाला कोई नहीं था और तीज त्योहार भी सही तरह से नहीं मना पाते थे।

"जहाँ तक मेरी याददाश्त है, मेरे घर-परिवार के जो संस्कार रहे उनमें शराब, जुआ या अन्य व्यसनों के लिए कोई जगह नहीं थी। व्रत, पूजा, गंगा-स्नान आदि सब वंश रीति के अनुसार चलते थे। लेकिन हमारे देवताओं में नौंना चमारी, भौपुर की चामुण्डा, बंगाले के बंगाली बाबा, सैयद बाबा प्रमुख थे। मेरे घर सहित पूरे चमरियाने में दारूबाजी का चलन तो दूर नशीले पदार्थों का नामोनिशान तक नहीं था । परन्तु कुछ भूत-देवता सयानों पर आते थे, तो दारू माँगते थे। अपेक्षाकृत सम्पन्न सवर्ण महिलाएँ इन सयाने-ओझाओं की अहमियत बढ़ाती थीं। खास कर बांझ बनैनियाँ, मुसलमानियाँ और अहीरियाँ इन सयानों से बेटा माँगा करती थीं। जिनके बेटी पैदा हो जाती, उसकी शिकायत पर उल्टा उन्हें ही दोषी ठहराया जाता कि पूजा साफ मन से नहीं की। बेटा होता तो वह औरत कानों-कान गाँव-भर में सयानों का प्रचार करतीं कि 'जो मोइ मखनी भगत ने दओ है'। दिलचस्प यह कि सामान्य स्थिति में ये दलित भगत इन सवर्ण औरतों के यहाँ काम करने जाते थे तो ये पूरी छुआछूत बरतती थीं।"[17]

यहाँ लेखक द्वारा नारी के सामाजिक संघर्ष को दर्शाया गया है कि सवर्ण महिलाएं समाज में ओझाओं को महत्व देती थीं और जो बांझ बनेनियां, मुसलमानियाँ और अहिरियां लड़का पैदा न होने की वजह से समाज में सामाजिक संघर्ष कर रही थी इसलिए ओझा बाबाओं के पास पूजा करवाने जाती थी ताकि उनको पुत्र प्राप्ति हो।

"ऐसा नहीं था कि मृत्यु किसी ने देखी नहीं थी या यह निराली मृत्यु थी, हाँ आश्रितों का क्या होगा। इस अहसास ने करुणा को केन्द्रित कर दिया था। अम्माँ का तो हँसना खिलखिलाना जैसे सदा के लिए गायब हो गया था। वह अपने शेष जीवन में भी गम्भीर बनी कष्टों से जूझती रही। तब रोते-रोते विलाप करती जा रही थी- "अरे तुम तो चले गये इन चार बालकनुं कूँ किन के मौं असरिया (मुँह ताकने वाले) बनाइ के छोड़ चले हो रे, सौराज के चाचा, मैं अब कैसे जिऊँगी और कैसे मरऊँगी रे! यूँ तो वह महीनों तक उन्हें याद करके रोती रही, लगता कि गा-गाकर रो रही है-"तेरी बगिया कूँ कौन सँवारेगो रे माली रे... बिन रुत के तेरो बाग उजरि गओ फूल बिखरि गये माली रे!"[18]

इन पक्तियों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि यहाँ एक असहाय भारतीय नारी अपने पति के गुजर जाने के बाद समाज में कैसे रहेगी? कैसे जिएगी तथा अपने परिवार का पालन पोषण कैसे करेगी? उसके जाने के बाद वो एकदम अकेली हो गई है और समाज के सामाजिक संघर्ष को कैसे झेल पाएगी?

"अम्माँ ने मेरे चेहरे से खून पोंछा और हाथ पकड़ कर तुरन्त उसकी माँ के पास ले गयी। फूलचन्द की माँ देह से मोटी, लम्बी और अपने बेटों का अंध पक्ष लेने वाली महिला थी। अम्माँ रुआँसी घबराहट भरे स्वर में उससे बोली - "चाची देखो, तुम्हारे लरिका ने मेरे बेटा की का हालत करी है?" फूलचन्द देखते ही जंगल की ओर भाग गया था, इस पर उसकी माँ ने कहा- "मैं समझाइ दुंगी 'मुखी'। वैसे सौतेली औलाद कूँ सौतेलों की तरह रहना चाहिए। तेरो लोंड़ा दिन में लड़ौ काहे कूँ हो ? तू ही बताई लड़ौ हतौ या नाँय?" इस तरह वह उलटा हावी होने लगी। उसके बाद अम्माँ बुदबुदाती हुई घर लौट आयी। भिकारी और डालचन्द ने हिमायत लेना तो दूर, उल्टा यही कहा "गे काहू तें कछु उल्टो-सूधो कहेगौ तो ऐसे ही पिटौगो। मूड़ पै चढ़ावैगी तौ ऐसे हाल करावेगी । हमें तो नाँय कछु सल है और नाँय काउ से कछु मतलब । गे पाली में रहैगौ तो सँमरि के रहनो पड़ेगौ याइ ।"[19]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने इन पंक्तियों में महिला के सामाजिक संघर्ष को दर्शाया है जिसमें एक माँ अपने बच्चे के लिए फूलचंद की मां जो उनसे देह में मोटी और लम्बी थी फिर भी अपने बेटे के लिए वो समाज से संघर्ष करने चली गई।

"फिर क्या था, माँ गुस्सा में तनी आयी और मुझे उल्टी-सीधी गालियाँ देने लगी। मैं डर गया। जबकि छोटे चच्चा कह रहे थे । "लाड़-प्यार में हाथ फेरि दओ । बड़ों भैया लगतु है। बेमतलब बात को बतंगड़ बनाइ रए हो। लल्ली मेरे ढिंग ही तो सोइ रही। मोह पतो है ।" अम्मा खामोश थी। अब डर था कि कहीं लालचन्द ने आते ही आक्रमण कर दिया तो क्या होगा? परन्तु हर मामले में सख्त रहने वाले लालचन्द ने घर आने पर अपनी पत्नी की बात सुनी। बेटी से पूछा। उसके बाद अपनी पत्नी को इतना जोर से फटकारा कि वह कोने में घुस गयी। "बेवकूफ कहीं की ! गाल पर हाथ फेर दओ, कौन सो पाप कर दओ? भाई है वह। बहन के गाल पर हाथ का फेर दओ। वह पुचकार सकतु है। जो बात तुम सोचत हौ सो तुम्हारे मन में है जा मन पै नाँय है। जा में

चाहे मैं वाइ कितनो हूँ डाँटूँ पर मैं जानतूं चरित्तर में सौराज हीरा है । गे बड़ो हैके ग्यानी महात्मा बनेगौ ।"[20]

उनके इस रुख ने एक गँवार आदमी के मन में छिपी प्रगतिशीलता और स्पष्टता ने मुझे संबल दिया। उनका पक्ष सुनकर अम्मा की आँखों में चमक आ गयी, अन्यथा वह मेरे प्रति चिन्तित थी । उसने एक बात कही- "देख सौराज कान खोल के सुन और मेरी बात गाँठ बाँध ले तू बिगड़न वानिकी होड़ कबऊ मत करिए। उनके घर धन है। लोग हैं। तेरो तो बाप हूँ जिंदौ नाँय है । तेरी हिमात कोई नाँय लेगो। तू जो करेगो सो खुद भरेगौ ।"[21]

श्यौराज सिंह बेचैन जी द्वारा रचित उनकी आत्मकथा में नारी के सामाजिक संघर्ष को व्यक्त करती हुई ये पंक्तियाँ यह बतलाती हैं की किस तरह से एक नारी समाज में संघर्ष करती हुई अपने पुत्र को पाल रही है और उसे उसके पिता के ना होते हुए समाज के लोगो के संग कैसा व्यवहार रखना चाहिए। यह सीख दे रही है।

"इस खबर से दर्शकों एवं तमाशबीनों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। जाट-ब्राह्मण चारपाइयों और तख्तों पर बैठे थे। चमार, भंगी, अहेरिया, धोबी सब जमीन पर जमा थे। भारी भीड़ थी। मैं दूर कोने में खड़ा अपनी बहन के साथ डरा-सहमा सारा घटनाक्रम देख-सुन रहा था। अम्माँ अपराधी की मुद्रा में, पर्दा किए और सिर झुकाए बैठी थी। उससे ऊल-जलूल सवाल किए जा रहे थे। कुछ के सवाल और व्यंग्य-बाण अम्माँ के मानस पर बराबर बरस रहे थे 'विधवा क्या हुई, दो-दो खसमों के संग रहने के मजे ले रही है, चमरिया जो ठहरी।' अम्माँ के पास न तो कोई जवाब था और न कोई जवाब सुनने वाला था। पुलिस को घूस देना और निर्णय गाँव के पक्ष में दिया जाना, पहले से ही तय था। गरीब रामलाल अपनी जेब खाली कर हताश ठगा सा बैठा था। हमारा भविष्य अपनी अम्माँ से बँधा था। पंच गाय-भैंस की तरह जिसके हवाले करते, हम माँ के पीछे-पीछे चले जाने को मजबूर थे।"[22]

अतः इन पंक्तियों में लेखक ने नारी की बहुत ही दयनीय दशा को प्रस्तुत किया है जिसमें एक छोटी जात की नारी के ऊपर समाज में आरोप लगाए जा रहे हैं और वो इस क्रूर समाज में उनकी गहरी चोट करने वाली बातों तथा आरोपों को सहन कर रही है। ऐसी परिस्थितियाँ समाज में आज भी देखी सुनी जाती है किस तरह से समाज में दलित महिलाओं को डाइन

कह कर प्रताड़ित किया जाता है यूपी और बिहार में यह घटनाएं ज्यादातर घटित होती हैं।

<u>नारी का आर्थिक संघर्ष:-</u>

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर आर्थिक रुप से संघर्ष कर रही है इसी दृष्टि को केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में नारी द्वारा चलते चले आ रहे आर्थिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के आर्थिक संघर्ष की पुष्टि इनके आत्मकथा साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। जिसका उदाहरण इस प्रकार है:

"हमारे भविष्य की सोच कर सभी दु:खी और चिन्तित थे, पर किसी के वश में कुछ नहीं था । पुरुष अपाहिज, महिलाएँ और बच्चे ऐसे असहाय कि कुछ कहा नहीं जा सके। हमारे परिवार में आँख से, दिमाग से और हाथ-पाँवों आदि सभी से पूर्ण स्वस्थ पुरुषों में केवल एक व्यक्ति था और वे थे मेरे पिता जो अब नहीं रहे थे। ग्यारह-बारह वर्ष की उम्र में उनका विवाह हुआ था और बाईस - तेईस वर्ष की उम्र में ही वे चल बसे थे। उनके बाद हमारे घर में साग-सब्जी से भरपेट खाना मिलना तो दूर, दोनों वक्त नमक-चटनी से भी रोटी मिलनी मुश्किल हो गयी थी। हारी-बीमारी में दवा-दारू के लिए भी अब घर में फूटी कौड़ी नहीं थी। ऐसे संकट काल में मुझसे छोटा भाई नेकसिंह बीमार पड़ा और उसका कोई उपचार नहीं हो सका। इलाज-दवा तो दूर, दो वक्त की दाल-रोटी के लाले पड़े हुए थे। अम्माँ के शरीर पर चाचा के मरने के बाद से कोई नया कपड़ा नहीं आया था। ननिहालिया गरीब, स्प्रिंटिया और दिवालिया थे। अम्माँ मेरे छोटे भाई नेकसिंह को गोद में उठा कर सयाने और वैद्य वगैरह के पास भागी -दौड़ी थी पर कोई लाभ नहीं हुआ था अन्ततः हमारी आँखों के सामने तिल-तिल कर नेकसिंह ने भी दम तोड़ दिया था।"[23]

अतः इन पंक्तियों में बेचैन जी ने नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाया है जिसमें लेखक की मां ने अपने छोटे बेटे के बीमार हो जाने पर आर्थिक रूप से मजबूत ना होने के कारण बहुत संघर्ष किया फिर भी अपने बेटे को न बचा सकी। और पिता के गुजर जाने के बाद एक नया कपड़ा भी अपने तन पर नहीं ला सकी। क्या सवर्ण महिलाओं ने शायद ही कभी ऐसी आर्थिक तंगी झेली हो।

"मैं दगड़े को पार कर मानती के घर की ओर बढ़ा और वह उधर से मेरी ओर आयी। मैंने पूछा- "मानती बता बुआ तुमसे क्या कह गयी है? ये बुढ़िया माता तो घर कब्जाए बैठी है। मेरी साइकिल आँगन तक में खड़ी नहीं करने दे रही और न बोरी में बँधा सामान आँगन में रखने दे रही है। क्या यह सच है कि बुआ ने इसे चाबी सौंप दी है?" मानती मेरी ओर मुखातिब होकर बोली- "हाँ सौराज भैया, गे बात सच है। मेरे सामने की बात है। तेरे फूफा - बुआ दोनों कह रहे हते कै तू घर में मत घुसने देना। जब ठहरिवे कूँ ठौर नाँय मिलैगो तब घर के बगैर परेशान है कें पढ़िवे की बेकार की जिद्द छोड़ कें काम करिवे की सोचैगौ। भट्ठा कौ पतो लिखवाइ कें दै गये हैं कै तू आवौ चाहेगो तो पतौ दे दइए।" मानती के मुँह से निकलते ये अप्रत्याशित शब्द सुनकर मैं हैरत से उसकी ओर देखता रह गया। अब वह मुझे समझाने लगी- "तेरे माँ नाँइ बापु नाँइ, सहारें कूँ घर में कोई और नाँइ जमीन नाँय, चाम कौ काम नाँइ। अन्धे बाब्बा, अन्धे ताऊ और तू उन सबकूँ छोड़ि के गामतें बाहर चलौ आयौ है। जे बुरी बात है।" तेरे फूफा कह गये हैं कि-"भट्टा पै नाँइ आवै तो मानती समझाइ दइए कै अपने घर लौटि जाइ। अब पढ़िवे-बढ़िवे के चक्कर में नाँय पड़े। बिना सहारे के कोई पढ़ि नाँइ जावै है। अपने अन्धे बब्बा को डंडा पकड़ि कें सहारो देइ। पढ़िवो-लिखिवो हर काऊ को काम नाँइ है।"[24]

अतः लेखक ने यहाँ नारी के आर्थिक संघर्ष को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि लेखक ने मानती के द्वारा आर्थिक संघर्ष को दर्शाया है क्योंकि लेखक के पिता के मर जाने पर लेखक के परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई थी। जिसकी वजह से लेखक की मां लेखक को भट्ठे पर काम करने के लिए नहीं भेजना चाहती।

"अम्माँ का ध्यान मेरी ओर गया और वह बोली - "कह तौ ठीक रओ है, पर कोई और तो खातु नाँय है ढड़ायन । जो खाने की चीज होती तो जे ऐर (यादव) देवता काहे कूँ खेतनु में छोड़ि देते।" वह ठीक कह रही थी। पर मैंने फिर आग्रह किया-"का मालुम जो बात हमसे पहले काऊ के दिमाग में आयी नाँइ होई और जो का जरूरी है कि जिन पै जमीनें हैं, उन पै अकल हू होइ।अजमावन लेन में का बुराई है?" मैंने खुद को चतुर समझा था, "हाँ पहले काऊ तें सलाह लै लें, तब खांगे।" अम्माँ ने आगे कहा- "सलाह लेनों ठीक नाँइ है जो सला देगो सो हमें खान कूँ ढड़ायन काए कूँ छोड़ेगो? अकलमंदी जे है

कि काऊ कछु मत बताओ, पहले खाइकें देखि लेऊ, फिर सोचो।" मेरी राय अम्माँ की समझ में आ गयी और हम ढड़ायन बटोर कर घर लौट आये। आते ही अम्माँ ने एक पतीली-भर कर खौलते हुए पानी में ढड़ायन डाल दी और भूखे बैठे भाई-बहन को कहा- “थोड़ो और सबुर करो बेटा, फिर खइयौ पेट भरि कें।" कुछ देर में वह ढेंचे की तरह उबल कर पक गयी। मैं, माया और रामभरोसे भूख की बेसब्री से पतीली के इर्द-गिर्द मँडरा रहे थे। मैं निश्चित तो नहीं था, कि मेरी नई खोज से हमारी मूलभूत खाद्य समस्या का समाधान हो जाएगा, पर ऐसा सोच जरूर रहा था। रात घर में चावल नहीं थे इसलिए हम चारों भूखे सोए थे। अम्माँ के लिए यह भूख और अधिक कष्टकर थी, क्योंकि उसकी गोद में पाँच-छह महीने का बच्चा था। उसे बच्चे को दूध भी पिलाना पड़ता था।"[25]

प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि यहां नारी के आर्थिक संघर्ष हमें देखने को मिलता है अर्थात् यहाँ एक मां आर्थिक रूप से मजबूत ना होने के कारण अपने बच्चों को ढड़ायन खिलाने पर मजबूर हो जाती है जो की एक ना खाने वाला पदार्थ होता है। कमो बेस ऐसी हालत में दलित समाज आज भी भोग रहा है। प्रयागराज में लगने वाले मघमेला में कुछ घरों में खाद्य सामग्री को सुखाकर रखते थे।

"मैं गठिया- बाय के दर्द से परेशान था और जीजा जी की आवाज गायब थी। घर में आय का कोई जरिया नहीं था । अम्माँ की कोख से पैदा हुए दोनों बेटे भिकारी को बेहद प्यारे थे, परन्तु अपनी बेटी को पालने को वे कतई तैयार नहीं थे। अनपढ़ अम्माँ ने उन्हें बुला तो लिया, पर क्या करती? संकट बढ़ा। पर ऐसे हर संकट में हमारे पास एक ही हल होता था-- पुटरिया (पोटरी) में लत्ते-गूदड़ (कपड़े) बाँध कर गाँव छोड़ कर चले जाना। माँ भिकारी के पास रहती तो पिटती-प्रताड़ित होती रहती थी। उसका उत्पीड़न असह्य हो जाता था तो साल-छह महीनों के बाद वह नदरोली लौट आती। हमें साथ लेकर वह कभी चन्दौसी, कभी बाजपुर और कभी दिल्ली पहुँच जाती थी। भिकारी अपने बच्चों को अपने पास रख लेते थे। अम्माँ मेहनत करने जाती तो हमें भी साथ ले जाती थी। जीजा की बीमारी और मेरे जोड़ों के दर्द की खबर सुन कर वह गाँव आ गयी थी। वह हम दोनों के इलाज के लिए ऐसे छटपटा रही थी जैसे उसके दिल के दोनों हिस्सों में कुछ हुआ हो। वह कहती

थी- हम दिल्ली, चन्दौसी कहीं कमा-खाएँगे। पाली जाकर मार-अपमान कब तक सहेंगे? लेकिन बीमार लोग क्या काम करते और कैसे करते ? जिनके पास पुश्तैनी जमा पूँजी है, अर्थात् बाप-दादा की भूमि है और विरासत में आवासीय भवन मिले हैं, उन पर काहे का संकट ? कमाकर तो उन्हें कोई और खिलाएगा ही। पर हमारी स्थिति ठीक उलट थी, जिसके सुधरने के कोई आसार नहीं थे।"[26]

यहाँ बेचैन जी ने आर्थिक स्थिति का वर्णन करते हुए अपनी माता अर्थात् नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाया है जो की लेखक के सौतेले पिता के पास रहती थी ताकि उनके बच्चो को भोजन मिल सके परंतु इसके साथ-साथ मां को उनकी प्रताड़ना भी झेलनी पड़ती थी। जिसकी वजह से मां ने अलग-अलग जगह जा कर आय का अर्जन शुरू किया जिससे बच्चों का पालन - पोषण हो सके।

"आखिर चौथे दिन की सुबह आ गयी। कहीं से भी कोई नहीं आया। अब शवगृह का खर्चा, लाश को ले जाने वाली गाड़ी का खर्चा और लौट कर घर जाने का किराया। कहाँ से आयें इस सबके लिए पैसे? माँ के करुण क्रन्दन में जीजा जी की मौत के साथ-साथ लाश को कफन-दफन के लिए पैसे न होने की चिन्ता भी शामिल हो गयी थी। पर रोते रहने से ही क्या होता? आखिर झुग्गी के कोने में बैठे, हम माँ-बेटों ने इस संकट से उबरने के कई उपाय सोचे, पर सब बेकार।"[27]

यहां लेखक ने इन पंक्तियों में नारी संघर्ष के आर्थिक रूप को दर्शाया है। जिसमें लेखक के जीजा की मृत्यु के बाद के खर्चों पर विचार करने के संघर्ष को दर्शाया है। की शवगृह का खर्चा कहां से आएगा लाश को ले जाने वाली गाड़ी का खर्चा और वहाँ से घर वापस लौटने का किराया कहां से जुटाया जाएगा इसके लिए संघर्ष करती हुई यहाँ नारी प्रतीत होती है।

<u>नारी का शैक्षिक संघर्ष:-</u>

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर शिक्षा के लिए संघर्ष कर रही है उसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में आर्थिक संघर्ष को व्यक्त

किया है। नारी के शैक्षिक संघर्ष की पुष्टि उनके आत्मकथा साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। जिसके उदाहरण इस प्रकार है:-

"शुरू में कुछ चाहा भी था तो अम्माँ ने दोनों हाथ पकड़ कर झकझोर कर कहा था- "सुन सौराज, कान खोल के सुन! तेरो बाप मरि चुको है। वो तेरी सुनन कूँ अब कबऊ लौटिके नाँय आवैगो समझे। मैं तेरी कोई जिद पूरी नाँय कर पाउँगी। अब तोइ अपनी जिन्दगी अपनी कमाई में गुजारनी है। जिद्द छोड़, कछु काम सीख ले। कछु नाँय तो साइकिल में पिंचर जोड़नों ही सीख ले।" इस तरह बोलते-बोलते वह रोने लगी और आँसुओं से डबडबाई आँखें लेकर घर के अन्दर चली गयी। इस प्रकार मेरा बचपन मेरा बोझ लेकर मेरे कमजोर कन्धों पर सवार होना शुरू हो गया था। बचपन मैं छोड़ नहीं सकता था और भार लेकर दौड़ नहीं सकता था। जीवन की मंजिलें आवाज दे रही थीं। रास्ते अनिश्चित और अपरिचित थे। पाली में मेरा गुजारा नहीं था। मैं यहाँ अवांछित तत्व था। बचपन के निर्वाह की जिम्मेदारियाँ खुद के कन्धों पर थीं।"[28]

यहाँ पर एक नारी शैक्षिक संघर्ष करती हुई प्रतीत हो रही है जिसमें वह खुद की मजबूरी के कारण अपने पुत्र को कह रही है की तुझे अगर पढ़ना है तो पहले कमा कर ला फिर पढ़ने की सोचिए यहाँ पर नारी की लाचारी का चित्र उभर कर हमारे सामने परिलक्षित होता है।

"किन्तु अम्माँ चीख-चीख कर कह रही थी- "जो कारे पेट को आदमी है, जा को बेटा फेल है गओ तो मेरो सौराज न पढ़ जाय, जा मारें दारीजार ने किताबें जराई दईं। पर मैं मन मसोसि कें कह रही हूँ, बंदे - याद रखिये, जो सौराज जरूर पढ़ैगौ। भगवान के घर देर है अंधेर नाँय है, और तू कितनोऊँ जल मरि, तेरे चाहिवे तें रूपा नाँय पढ़ि पावेगो ।"[29]

लेखक ने इन पंक्तियों में नारी के शैक्षिक संघर्ष को व्यक्त किया है यहाँ पर एक मां अपने पुत्र की शिक्षा के लिए उसके सौतेले पिता से संघर्ष करती हुई प्रतीत हो रही है। और बेटे की किताबे जला देने पर अपने पति को कोस रही है।

"आँसुओं से भीग कर रूमाल-सा हो गया झण्डा अलग रखा और कहने लगी- "जो तू पढ़नो चाहत है तो पहले अपने मर गये बाप को

वापस बुला। बाप नाँय लावत तो पहले अपने खान कूँ रोटी पहन्न कूँ लत्ता और फीस किताबन कूँ पैसा ला। तब तू स्कूल जइये और तब तू झण्डा गीत गाइये। का तू जानत नाँय है कै तू भिकरिया को सगो बेटा नाँय है। जो तोय चों पढ़ावेगो ? तू पढ़िवे की जिद्द नाँय छोड़ेगो तो जे तेरे संग-संग हम सब को मारि-मारि के घर बाहर निकार देगो।"[30]

यहाँ लेखक ने शिक्षा के प्रति संघर्ष करती हुई नारी के साहस को दिखाया है और एक मां अपने पुत्र से कहती हुई दर्शाया है कि तेरा अब कोई नही है इस दुनिया में तुझे पढ़ाने वाला तुझे अगर पढ़ना है तो खुद ही जतन करने होंगे।

आखिर अम्मा ने मुझसे कहा- "तू पढ़नो ही चाहतु है तो जा भिकरिया बन्दे की आँखिनु के सामने रह कैं मत पढ़ि । बेटा, तू कहीं और इन्तजाम करिलै। मास्टर जी को डेढ़ दुए साल से कम काम कर रओ है। वे तोइ थोड़ो दारि-चून नाँइ दिंगे का ? तू सवेरे ही यहाँ ते चलो जइये। कबऊ मन करे तौ ठाड़े-ठाड़े ढाई, दुए महीना में मोइ सूरत दिखाई जाए करिये। वैसे तू तो अकेलो ही रओ है। तोइ काऊ को सहारो नाइ मिलेगो तेरो सहारो तो भगवान ही है।" जाते समय अम्मा ने भिकारी से छिपा कर मेरी किताबों के थैले में करीब एक सेर आटा और थोड़ी सूखी मिर्चें रख दी थीं और कहा था- "रात को स्कूल में या कहीं और रुके तो दो टेम रोटी बनाइ कें खाइ लइए।"[31]

यहाँ लेखक ने एक साहसी मां को अपने बेटे की शिक्षा के प्रति जिज्ञासा को पूरा करने के लिए उसे अपने से दूर भेजने की करुण दशा को दर्शाया है। जिसमें नारी के शैक्षिक संघर्ष को हम देख सकते हैं।

"हरदयाल मुझसे एक वर्ष सीनियर था और पिछले तीन साल से लगातार दसवीं में फेल हो रहा था। उसने अपनी माँ को बताया था कि- "श्यौराज को सारे मास्टर लोग प्यार करते हैं। प्रेमपाल सिंह के तो यह साथ ही रहता है।" गाँव में अध्यापक की बहुत इज्जत होती है। वे मुझे अक्सर कहतीं- "श्यौराज भैया, तू मास्टर जी से कह कें अबकी ऐसी पढ़ाई करा दे कि मेरौ हरदिला पास हो जाए।" मैं नवीं में पास हुआ, उस वर्ष हरदयाल दसवीं में पास हो गया था। यह महज संयोग ही था। मैं उसके लिए कुछ भी करने की स्थिति में नहीं था। सिवाय इसके कि मेरे यहाँ नियमित पढ़ने-लिखने के कारण एक वातावरण बना था, जिसका लाभ हरदयाल को मिला होगा।

किसी अध्यापक ने मेरे कारण उसकी पढ़ाई में मदद की होगी, ऐसी कोई वजह नहीं थी। परन्तु उसकी माँ खुश थी। वह कहती- “भैया तू आइ गयौ तो हरदिला पास है गयौ। नाँय तो अब का पास होतो, अब तो दाड़ी मौंछें लिकरि आयी।” वह बेटे की सफलता का श्रेय मुझे दे रही थी। जबकि संगति पाकर वह पढ़ा ज्यादा जरूर था, पर पास तो वह खुद अपनी मेहनत से ही हुआ था।"[32]

प्रस्तुत पंक्तियों में हरदयाल की मां अपने बेटे की शिक्षा के लिए संघर्ष करती हुई प्रतीत होती है और वह बेचैन से आग्रह करती है की वह उसके बेटे को अपने साथ रखे और मास्टर से कहे की थोड़ा इस पर ज्यादा ध्यान दें जिससे वह परीक्षा में सफल हो जाए।

<u>नारी का राजनैतिक संघर्ष:-</u>

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर राजनैतिक संघर्ष कर रही है इसी दृष्टिपर ध्यान केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में राजनैतिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के राजनैतिक संघर्ष की पुष्टि उनके आत्मकथा में दृष्टिगोचर होती है। जिसके प्रमाण इस प्रकार है:-

"उधर बऊ ने सिर पर पल्लू डाल कर इशारों से आदेश किया - "पत्तलें बिछा दो। दो-तीन लोग हैं जो पूड़ियाँ, सब्जी और बूरा आदि परस देंगे।" मैं झिझकते हुए पंक्ति से पत्तलें बिछाता चला गया। दस-पन्द्रह ही बिछाई होंगी कि पीछे मुड़ कर देखा तो पत्तलें बिछी हैं, पर लोग बैठ नहीं रहे हैं, बल्कि जो बैठे थे, वे भी उठ खड़े हुए हैं। केवल तीन-चार व्यक्ति बैठे रहे, जिनमें रामजीत प्रधान, खुशीराम मास्टर, यदुनाथ शास्त्री जी। बाकी सब तन कर खड़े हो गये। बोले-"अरे भाई कछु ईमान-धर्म को ध्यान रखनो है कै नाँइ ? अब तुम सब यैर चमार बन रहे हो तो बनो। पर हमें तो धर्म भ्रष्ट मत करो, दावत दे रहे हो या ईमान लै रए हो? शास्त्री जी और मास्टर खुशीराम तो अस्पृश्यता के विरुद्ध लगातार बोलते ही थे। आर्य समाज के प्रचारक थे। अतः वे स्थिति को सँभालना चाह रहे थे। वे कह रहे थे कि- "भाई पत्तलें छूने से कछु नाँइ बिगड़तु। जे बनाइउ चमार ने ही हैं। ढाक के पत्ता हू जाई की

बिरादरी की महिलाएँ तोड़ कें लाई हैं। पानी छिड़क के धोइ लेउ।" पर लोग बिगड़ रहे थे। गुस्से से बेकाबू होकर बोल रहे थे, तभी बऊ को गुस्सा आया । वह एक लड़के का हाथ झटक कर बोली-"तू खाइ तो खा। नाँइ तो अपने घर जा। ज्यादा पण्डिताई दिखानी होइ तो अपने घर दिखइये सौराज मेरो बेटा जैसो है। मैं नाँइ मानती तुम्हारी छूतछात।" बऊ कह तो एक से रही थी, पर उसका सम्बोधन सभी के लिए था। उसकी मुखरता और दो-टूक भाषा से पूरा गाँव वाकिफ था। वह जितनी मजाकिया स्वभाव की थी उतना ही कड़क भी थी।"[33]

प्रस्तुत पंक्तियां में लेखक ने (अनोखिया) बऊ के द्वारा राजनैतिक संघर्ष को अपनी आत्मकथा में प्रस्तुत किया है। समाज के लोग उनके घर आ के भेदभाव कर रहे थे। पंक्ति में पत्तल बांटते वक्त छुआछूत करते हैं जिस पर बऊ इसके विरूद्ध संघर्ष करती हुई प्रतीत होती है।

"बाजपुर छोड़ते वक्त सरदार ने फिर कहा-सूरजमुखी तुम वापस गाँव जाना चाहती हो तो जा सकती हो। तुम्हारे और भी बच्चे हैं, पर स्वराज को मत ले जाओ। इसे यहीं रहने दो। हम इसकी पगार तेरे गाँव में भिजवाते रहेंगे। इसे हमेशा काम दिया करेंगे। यह कभी खाली नहीं रहेगा। इतना यकीन हम दिलाते हैं। बड़ा हो जायेगा तब यहीं किसी लेबर लड़की से गुरुद्वारे में इसकी शादी भी करा देंगे। तुम बिलकुल फिक्र मत करो। अम्माँ को यह प्रस्ताव मंजूर नहीं था। उसने कहा थाबारह साल के - "मैं अपने दस--जीवाक कूँ कहाँ अकेलो छोड़ि कें जाऊँगी? मरि जाऊँगी पर छोड़ि के नाँय जाऊँगी? मैंने कोई कर्ज नाँय बढ़ाओ है अपने ऊपर।”34

उपर्युक्त पंक्तियों में लेखक ने एक मां के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाया है जिसमें सरदार लोग उसे उसके बेटे को छोड़ जाने के लिए बोलते हैं और उसके जीविका अर्जन का साधन बनने को कहते है कि ये काम करेगा तो हम सब उसकी मदद करेंगे और पैसा भी तुम्हे भेज दिया करेंगे पर एक छोटे से बारह वर्ष के बच्चे को छोड़ना एक मां के लिए असम्भव था जिसका वह विरोध करती है। वह सरदारों की राजनीति को बखूबी समझती है।

"मैं दूर कोने में खड़ा अपनी बहन के साथ डरा - सहमा सारा घटनाक्रम देख-सुन रहा था। अम्माँ अपराधी की मुद्रा में, पर्दा किए और सिर झुकाए बैठी थी। उसे उल जरूर सवाल किए जा रहे थे। कुछ के सवाल और व्यंग्य बाण अम्मा

के मानस पर बरस रहे थे। 'विधवा क्या हुई', दो-दो खसमों के संग रहने के मजे ले रही है, चमरिया जो ठहरी। अम्माँ के पास ना तो कोई जवाब था और न कोई जवाब सुनने वाला था। पुलिस को घूस देना और निर्णय गांव के पक्ष में दिया जाना, पहले से ही तय था। गरीब रामलाल अपनी जेब खाली कर हताश ठगा सा बैठा था। हमारा भविष्य अपनी अम्मा से बंधा था। पंच गाय-भैंस की तरह जिसके हवाले करते हम माँ के पीछे-पीछे चले जाने को मजबूर थे।"[35]

बेचैन जी ने यहां बताने का प्रयास किया है कि आज भी गांव में न्याय व्यवस्था पहले की ही तरह सवर्ण अपने ही हिसाब से करते थे। चाहे असलियत कुछ भी हो उनका निर्णय सर्वोपरि होता है। देश के पुलिस थानों का हाल भी यही है कि जो दबंग या पैसे वाला हो न्याय भी उसी के पक्ष में होता है अर्थात गैर दलित समाज आज भी राजनीति का शिकार वही होता है।

"बहन माया और भजन के बेटे की नव प्रेम-विवाहित पत्नी रानी शर्मा की यह शिकायत मुझ तक पहुंची है कि सिल्लू ने उससे झूठ बोलकर प्रेम विवाह किया है। सिल्लू ने उसे बताया था कि वह जाट है। लेकिन दिल्ली आने पर रामभरोसे की बेटी ने पूछा -"भाभी तुम कौन जात हो? हमारी जात की तो लागत नॉय हो। तो उसने बताया- मैं तो ब्राह्मण हूँ, पर हम तो ब्राह्मण नॉय हैं। उसने कहा जानती हूं। मैं जाट सोच कर आई थी 'पर हम तो जाट नहीं जाटव हैं।' 'क्या जाटव जाटों से बड़े होते हैं? पता नहीं पर अलग तो होते हैं। जाटव मायने क्या? चमार।"[36]

श्यौराज सिंह बेचैन ने यहां यह दिखाने का प्रयास किया है कि समाज में आज भी किस कदर लोगों में झूठ बोलने का चलन बढ़ गया है इसका उदाहरण लेखक का खुद का भांजा भी राजनीतिक संघर्ष का उदाहरण पेश करता है।

वे बोलीं -- "जैसा तुम समझो। वैसे सौराम हमारे पास कोई नहीं है, हम सोचते हैं तुम हमारा हाथ भी बँटाओ और पढ़ो - लिखो भी। तुम जमे रहे तो घर में तुम हमारे बेटे की जगह भी पा सकते हो। उन महिला की बात मुझे तो अच्छी लगी, पर मेरे भविष्य का फैसला तो मौसा जी के हाथों में था। वह उनसे पुनः कैसे मिलती? अतः मैने घर जाकर मौसी से कहा -"मौसी, मैं उन मेम साहिबा

के घर रह कर उनके घर का काम करूँ और पढूँ भी तो क्या मौसा जी इस बात को मानेंगे?" मौसी मेरी बात सुनकर चौंक पड़ी और बोलीं--" पढ़नौ अच्छो है, पर का पढ़ाई ऐसी बड़ी चीज है जिनके लिए तू मौसा-मौसी कूँ छोडि पराए घर जानें की सोच रयौ है?"[37]

यहां श्यौराज सिंह बेचैन जी ने शहरी समाज का वर्णन किया है जिसमें शहरी महिलाएं पले- पलाए बच्चों को गोद लेने के लिए तैयार है। बेचैन जी को मीठे - मीठे शब्दों के द्वारा फंसाने का प्रयास किया गया है जो खुद बच्चे पैदा न करके दूसरों के बच्चे गोद ले लेती है।

-: श्यौराज सिंह बेचैन के काव्य में नारी संघर्ष :-

नारी का पारिवारिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो कि परिवार में निरंतर संघर्ष कर रही है इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में पारिवारिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के पारिवारिक संघर्ष की पुष्टि इनके काव्य में दृष्टिगोचर होती है। जिसके प्रमाण इस प्रकार है:-

“अंधी लड़की

के पिता-माता

करते हैं उसका ख़्याल

भविष्य की चिंता और

लड़की को

उठा ले जाता है।

साठ साला भेड़िया ।

भेड़िया खा चुका है

अनेक लड़कियाँ

लड़की के मां-बाप ने-

नहीं सिखाया विरोध

मान लिया बोझ और

कर लिया सब्र।

लड़की मन की,

आँखों से देखती है

और आँखों में झोंकी हुई धूल

साफ करना चाहती है

क्योंकि अंधेरा

कुदरत का नहीं, समाज का है।"[38]

बेचैन जी की इस कविता में नारी के पारिवारिक संघर्ष को दर्शाया गया है जिसमें एक अंधी लड़की का पालन पोषण उसके माता- पिता करते हैं, पर अपंगता के कारण व्यस्क होने पर उस लड़की को एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति शादी करके ले जाता है और वह अपने परिवार की लाचारी को महसूस करते हुए कुछ बोल नहीं पाती और संघर्ष करती रहती है। ऐसे दृश्य ग्रामीण भारत में आज भी दिखाई देते हैं।

"शादी नहीं हुई बिटिया की

बिटिया उमर-दराज हो गई।

बूढ़े माता-पिता की चिंता

व्यक्ति नहीं, समाज हो गई।"[39]

इन पंक्तियों में कवि ने एक माता - पिता की चिंता को दर्शाया है उनकी बेटी उम्र दराज हो गई पर शादी न होने की वजह से उनकी बेटी को समाज के

उलाहने सुनने पड रहे हैं और साथ ही परिवार को भी। ऐसे उदाहरणों से उस बेटी के पारिवारिक संघर्ष की पुष्टि हो जाती है।

"दुधमुंहे बच्चे-

को 'धनिया' पीठ से बांधे हुए

काम पर पहुंची

मगर सिर दर्द से भारी भी है।"[40]

यहाँ कवि ने अपने परिवार अर्थात् अपने छोटे से बच्चे के लिए संघर्ष करती हुई नारी को प्रस्तुत किया है जो की खुद की तबियत खराब होने पर भी अपने बच्चे को पीठ पर बांधे मजदूरी कर रही है। ऐसा ही वर्णन निराला जी ने भी किया है।

"'माँ' कहती थी

तू पढ़ेगा तो

मेरा पेट कौन भरेगा ?

मजदूरी कौन करेगा ?

सौतेले बाप ने.

इसी बिना पर

मार-पीट कर

बार-बार घर-बदर

किया था

कि मैं पढ़ना चाहूंगा.

हर हाल में।"[41]

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने पारिवारिक संघर्ष करती हुई महिला को प्रस्तुत किया है जो की अपनी मजबूरी को अपने पुत्र के सामने रखती है और परिवार के पालन पोषण की चिंता को अपने बेटे के साथ साझा कर रही है।

“थके तुम और

थकी मैं भी

परन्तु तुम-

दुनिया की भागदौड़ में ।

और मैं-

घर की चारदीवारी में ।

निश्चित धरती और-

सीमित आसमान के नीचे

मैं सिमट कर रह गयी।

जानते हो क्यों

क्योंकि मैं ‘माँ’ हूँ।“ [42]

यहाँ बेचैन जी ने एक मां की व्यथा को अपने कविता के माध्यम से दर्शाया है जिसमें एक मां के पारिवारिक जीवन में निरंतर होते हुए संघर्ष को दर्शाया है जो घर की चार दिवारी में संघर्ष करती है।

“अब अपने

बच्चों की माँ है

मत पूछो कि कहाँ है वो

भरी जवानी

में बुढ़िया सी

ज्यों बुझ गयी

शमाँ है वो

कडुवे दुख-

मीठी यादें हैं

बुरी मार हालात की"[43]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने इन पंक्तियोँ में नारी के पारिवारिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है अत: एक मां भरी जवानी में परिवार के लिए संघर्ष करती हुई बुढ़िया होने लगी और वह बुरे हालातों को झेल रही हैं।

नारी का सामाजिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर संघर्ष कर रही है। इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के समाजिक संघर्ष की पुष्टि उनकी कविताओं में दृष्टिगोचर होती है। जिसके प्रमाण इस प्रकार है:-

"कहीं दब रही शोषितों की हड्डियों पै

हो रही कबड्डी आज

सुविधाभोगी प्रगति की

दौड़ बतलाते हैं।

दुल्हिन स्वतंत्रता,

जवान से अधेड़ हुई-

है सुहागिनी परन्तु

बाँझ बतलाते हैं।

यानी इस सुन्दरी के

अधिक चहेते लोग

आधी नींद सोते,

अभी आधे पेट खाते हैं।"[44]

इन पंक्तियों के द्वारा कवि ने नारी के समाजिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है

जिसमें नारी जवानी से अधेड़ उम्र की सुहागिन हो गई हैं परन्तु आज भी कोई पुत्र नहीं और उसे समाज बांझ बोलता है और उसके चहेते लोग ही इस को बुरा भला बोलते रहते हैं। जिसको वह झेलती आ रही है।

"सोच रहा हूँ

क्या कर पाये

लिखकर चंद

पंक्तियाँ भी हम

धिक इन आँखों

ने देखा है

एक साथ

दोनों का मातम

हमने कोरी

रस्म अदा की।

बच्ची ने

बच्ची पैदा की।"[45]

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि बेचैन समाज को यह बतलाना चाह रहे हैं की नारी पर कितने अत्याचार हो रहे हैं। शादी की उमर ना होने पर भी बच्चियों की शादी कर दी जाती है जो की पुराने रीति रिवाज की एक रूढ़ि रस्म है और इससे ज्यादा कुछ नहीं।

"पैदा हुई थी जिस दिन

घर शोक में डूबा था।

बेटे की तरह उसका

उत्सव नहीं मना था । ।

बंदिश भरा है बचपन

बोझिल-सी जवानी है

औरत की गुलामी भी

एक लम्बी कहानी है।।"[46]

बैचेन जी ने अपनी कविता की इन पंक्तियों में नारी के समाजिक संघर्ष को प्रस्तुत करते हुए यह दर्शाया है कि नारी की तो ऐसी दशा है की समाज के किसी भी घर में जब लड़का पैदा होता है तो पूरा समाज उस घर में हँसी खुशी शामिल होकर उत्सव मनाता है परंतु जब लड़की पैदा होती है तो वही समाज शोक में डूब जाता हैं। और समाज उसे बंदिशों में रखाता है।

"कवि।

तन कर समाज पर चढ़े हुए।

रूढी-रस्मों पर अड़े हुए।

हैं मूल्यवान, वैश्या समान

जो ले खरीद उसको कवि श्री

घोषित कर देते हैं महान।"[47]

वर्तमान समय में सवर्ण कवियों पर व्यंग्य किया गया है जिसमें कवियों की तुलना वेश्याओं से की गई है जो अपने तन को बेचती है लेकिन इन कवियों का ज़मीर ही मर चुका है। जो आधी आबादी को कविताओं में भी स्थान नहीं देते हैं।

"नारियों की दशा थी पशुओं की तरह

बन्दे थे द्वार शिवालयों के हमें।

इतनी होती थी बौछार अपमान की

हमको पीसना पड़ा, भूख में, प्यास में।"[48]

श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने कविताओं में उस भारत की तस्वीर खींची है जो आज भी उनकी गणना पशुओं में होती है। पशुओ में आत्मा होती है लेकिन महिलाओं में नहीं अर्थात इस समय भी दलितों की दशा 'मनुस्मृति' के कारण प्रगतिशील नहीं बना।

"महा - नर्क का

द्वार है नारी

मंत्र जाप की तरह रटाया।

नव- अखण्ड

ब्रह्मचारी हो तू

कैसा पावन मार्ग दिखाया।"[49]

श्यौराज सिंह बेचैन ने स्त्रियों के ऊपर जितनी जंजीर लगाई गई है उसको तोड़ने की बात की है उसे शिक्षा रूपी अमृत पिलाकर देश एवं समाज को निर्बल होने से बचाया जाना चाहिए। रूढ़िवादी सोच को बदलना चाहिए। आज महिलाएं हर क्षेत्र में परचम लहरा रही है।

"बुद्ध कहते थे-

संघ में स्त्रियों का प्रवेश वर्जित है।

संघ में स्त्रियों को लाया जाएगा-

तो संघ जल्दी मर जाएगा।"[50]

बुध्दकालीन में महिलाओं एवं दलितों को प्रवेश देकर उन्हें मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया। जिससे बहुत सारे लोगों ने विरोध किया कि उनके प्रवेश से धर्म नष्ट हो जाएगा फिर भी उन्होंने महिलाओं को प्रवेश दिया उन्हें मनुष्य माना लेकिन आज भी आजादी की लड़ाई मंदिरों तक प्रवेश के लिए महिलाओं को चुनौती बनी हुई है।

"आजकल भी तो ज़िंदा ही जलते हैं हम

माँओं, बहनों की इज्ज़त सुरक्षित नहीं।

आज भी ' मनु' के वंशज हृदयहीन हैं

स्कूलों कॉलजों से बहिष्कृत हैं हम।।"[51]

यहाँ श्यौराज सिंह बेचैन जी सच्चे कवि का वर्णन किया है कि कवि अपने समय के सच को जीता और भोगता है। इसलिए उसकी कविता उसके समय का दर्पण होती है। बेचैन जी की कविताओं में हमारे समय में घटित होने वाली घटनाओं की अभिव्यक्ति पाती रही है। जो समकालीन कविता की प्राण कहीं जा सकती है।

नारी का आर्थिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के जीवन में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर आर्थिक रुप से संघर्ष कर रही है इसी दृष्टि को केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में आर्थिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के आर्थिक संघर्ष की पुष्टि इनकी कविताओं में दृष्टिगोचर होती है। जिसके प्रमाण इस प्रकार है:-

“वह अविवाहित रहकर जानी

प्यार नहीं पैसा सर्वोपरि

मानवता आदर्श त्याग की

थाती बेबुनियाद हो गई ।

शादी नहीं हुई बिटिया की,

बिटिया उमर-दराज हो गई।“[52]

यहाँ पर कवि ने नारी के आर्थिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है जिसमें बेटी की शादी आर्थिक स्थिति मजबूत न होने के कारण उमर दराज हो गई है पर उसका विवाह नहीं हो रहा है। जिसके कारण समाज में आर्थिक संघर्ष कर रही है।

"ये औरत-

ये मजूरिनी औरत

ये औरत

ये भिखारिनी औरत

राजधानी की

तंग बस्ती में,

गँवा बैठी है

अपने जिस्म का

पाकीजापन।"[53]

श्यौराज सिंह बेचैन की कविता की इन पंक्तियों में नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाते हुए बताया है कि नारी अपनी आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए मजदूरी करती है, भीख मांगने को मजबूर है और यहाँ तक की वह अपनी आबरू को दांव पर लगा चुकी है।

"कुँवारी बिटिया बिन दहेज, मरी तेरी जोरू बिना दवाई रे ।

रे किसनवा....

मुआफिक नहीं, निजाम है प्यारे

कहाँ चैन-आराम है प्यारे

बने बुद्ध से फिरें रहमदिल कातिल, क्रूर कसाई ।

रे किसनवा लुट गयी तेरी कमाई।"[54]

यहाँ नारी के आर्थिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है जिसमें किसान पैसा न होने की वजह से दहेज नहीं दे पाया। पैसे के अभाव के कारण बेटी का विवाह नहीं हो पाया। आर्थिक तंगी के कारण दवा के अभाव में वे असमय ही मृत्यु का कारण बनती हैं।

"उसे सौ रुपल्ली पकड़ाए

छः सौ पर दस्तख़त करावाए

कहने को मैडम-टीचर हैं

असल में बँधुआ मजदूरिन हैं।

गली-गली खुलती जाती हैं

स्कूलों की नयी दुकानें

थोक में सौदा है शिक्षा का

दाम वसूल करें मनमाने ।"[55]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अपनी इस कविता में नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाया है जिसमें स्कूल की शिक्षिका महिलाओं के साथ अत्याचार होता रहता है एक प्रकार से बंधुआ मजदूर बना कर काम करवाया जाता है तथा उनको पूरा वेतन भी नहीं दिया जाता।

"दलितों का दोहन करते-

शोषण का महल बनाते हैं ।

देश लूटने वाले ही जब,

देश - भक्त बन जाते हैं

भूखों मरती दलित मजूरिनी

उनके 'स्विस' में खाते हैं ।

मेहनत करते-मरते देखी,

फटेहाल श्रम की बेटी ।

झुग्गी में दुख-दर्द आ गया

ना आयी सब्ज़ी रोटी

भूखी माँ की गोद में

सोया गहरी नींद नयनतारा ।

तुन-तुन... तुन-तुन-तुनन... इकतारा ॥"[56]

अतः बेचैन जी ने यहाँ नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाते हुए यह बताना चाहते हैं कि दलित मजूरिनें मजूरी करते करते भूख से मर गई और झुग्गी में दुख और दर्द तो आ गया पर सब्जी रोटी नहीं आ सकी जिसकी वजह से एक मां भी भूखी ही है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी कविता 'चमार की चाय' में नारी आर्थिक संघर्ष झेल रही है।

नारी का शैक्षिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर शिक्षा के लिए संघर्ष कर रही है इसी दृष्टि की और अपनी दृष्टि केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में शैक्षिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के शैक्षिक संघर्ष की पुष्टि इनके कविताओं में दृष्टिगोचर होती है। जिसके उदाहरण इस प्रकार है:-

"पढ़ गई होती तो

बिटिया नौकरी करती ज़रूर

चार पैसे जोड़

'वर' भी देखती बाजार में"[57]

यहाँ कवि ने नारी के शैक्षिक संघर्ष को व्यक्त किया है अर्थात् यहाँ यह बताया है कि यदि बिटिया शिक्षा प्राप्त कर लेती तो जरूर कोई अच्छे पद की नौकरी प्राप्त कर लेती। अपनी शादी के लिए चार पैसे जुटा लेती। उसके साथ साथ समाज में खुद ही एक पहचान बन जाती है।

"मनु एक भूत है-

डरावना भूत।

अनपढ़ बच्चों

और पर्दाकश महिलाओं को

यह भूत सरेआम

पकड़ता है और खा जाता है।

जिन घरों में

बेटियों को

पढ़ाया जाता है

यह भूत उन घरों में

नहीं पाया जाता है।

जिस घर में

बहू से पर्दा कराया जाता है

मनु उस घर में

पालथी मार कर

बैठ जाता है।"[58]

यहाँ कवि ने नारी के शैक्षिक संघर्ष को दर्शाते हुए मनुवादी विचारधारा पर सीधा प्रहार किया है कि यदि पर्दे में रहने वाली नारियों के घर में शिक्षा नहीं आ सकती तो वहाँ मनुवादी विचारधारा का बोलबाला पहले से ही पैर पसारे बैठा रहेगा।

"मो में एक ही कमी हती,

मैं कछू पढ़ी-लिखी न थी।

पै, ढाई आखरा तो जानती।

भायी नां तो, ब्याह क्यों किया?

बावरी बना गये पिया।"[59]

यहाँ कवि बेचैन ने नारी की मजबूरी तथा शिक्षा के लिए उसके संघर्ष को दर्शाया है अर्थात् यहाँ नारी अपने अंदर की शैक्षिक कमी को पहचानते हुए

अपनी स्थिति को बता रही है जिसमें वह केवल ढाई अक्षर ही शिक्षा ग्रहण कर पाई और यहाँ आक्षेप करते हुए अपने पति से बोलती है कि मैं अनपढ़ थी तो तुम मुझसे ब्याह क्यों किया?

"तालीम पे पाबंदी,

रोटी के भी लाले थे

गोरों से कहीं ज़्यादा

ज़ालिम ये काले थे

महिलाओं के सिर पर भी

गर्दिश ही का था साया

अब आ के हमें अपने

बाबा का ख्याल आया।"[60]

शोधार्थी ने देखा कि नब्बे दशक के दलित कवि श्यौराज सिंह बेचैन जी का आत्म संघर्ष एक सच्चे जुझारू जनवादी चेतना से लबालब कवि का संघर्ष है उनकी दृष्टि व्यापक है। उनकी चेतना में वे सारे गुण हैं जो भूख से पीड़ित जनता की आवाज़ है। वे जाति और वर्ग-हीन समाज के निर्माण के कवि हैं। वे समाजवादी, समतावादी राजव्यवस्था एवं संविधानवादी व्यवस्था के स्वप्न दर्शी हैं।

"सबसे ज्यादा अंक ले

हुई नवीना पास।

तभी साक्षात्कार को

गये नरोत्तम दास।।

गये नरोत्तम दास

बहन जी उत्तर दीजे।

सौ में सौ मिल गए

आपको नंबर कैसे?"[61]

प्रस्तुत प्रसंग में बेचैन जी का इशारा वर्तमान समय में किस तरह कॉलेज विश्वविद्यालय में दलित छात्र- छात्रों के साथ भेदभाव किया जा रहा है उनको शिक्षा से वंचित करने का पूरा प्रयास चल रहा है। हर वर्ष हजारों दलितों को प्रवेश से रोकने का काम किया जा रहा है उसी पर यहां ध्यान खींचा गया है।

"सच है ये बात समझ प्यारे।

यह सोच कुँवारी बहन है क्यों?

माँ-बाप का दिल बेचैन है क्यों?

मेहनत का फल बेज़ारी क्यों?

तू मेरे ग़म की बात न कर

अपना तो दर्द समझ प्यारे।

आजादी अभी अधूरी है।"[62]

श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने प्रस्तुत कविता में समाज की सच्चाई को दिखाने का प्रयास किया है किस कदर दलित, आदिवासी लोगों के साथ भेदभाव आज भी कायम है इसलिए हम सभी के लिए अभी आजादी सिर्फ दिखावा है। नहीं तो समाज में जो असमानता है वह समाज से कब की दूर हो गई होती लेकिन अंग्रेजी शासन से भी कठोर गुलामी में दलित, आदिवासी महिलाओं को जीना पड़ रहा है।

"वे बुर्का पहन कर,

यूनिवर्सिटी गयीं।

मज़हब अपनी जगह

पर वे पढ़ींलिखीं और -

इंजीनियर बन गयी।।"[63]

श्यौराज सिंह बेचैन ने यहां महिलाओं के शैक्षिक संघर्ष को बखूबी दर्शाया है। शिक्षा पर एक विशेष वर्ग का कब्जा बना रहे और एक बड़ी आबादी शिक्षा

की रोशनी से वंचित कर दिया जाए इसलिए महिलाओं पर बंदिश जारी है जो उचित नहीं है।

"उनके साथ प्यारी बेटियां

सदियों के सताए, दबाए

समाज के

मुक्त अभियान

में कोई

योगदान नहीं कर पाती हैं।"[64]

यहाँ बेचैन जी ने उन महिलाओं का वर्णन किया है जो दलित समाज में विवाह न करके गैर- दलित समाज में जाकर वे अपने समाज के हित के लिए कुछ नहीं करती है बल्कि गैर दलित समाज को आगे बढ़ाती है और अपने समाज से दूरी बना लेती है।

"एक दलित

आई. ए. एस. की माँ

निरक्षर होती है -

और इस पर उन्हें

मलाल है कि

बेटी क्यों पढ़ लेती है?"[65]

भारतीय प्रशासन में उच्च पदों पर पहुंचने वाले दलित बेटों की माताएं अनपढ़ होती है लेकिन बेटे- बेटियों को शिक्षा की रोशनी के लिए प्रेरित किया वे खुद अंधेरे में रही लेकिन आने वाली पीढ़ियों को शिक्षा रूपी रोशनी को पूरा अवसर दिया।

"बिकती ना तालीम मुल्क में

मैं भी द्वि अख़बार पढ़ लेती।

काश आज मैं शिक्षित होती.....

उनको प्रेम पत्र लिख देती।..."[66]

वर्तमान समय में जिस तरह शिक्षा की बिक्री बढ़ती जा रही है उसी के कारण भारत की बहुत बड़ी आबादी महंगी शिक्षा के कारण गरीब लोगों तक शिक्षा की रोशनी नहीं पहुंच रही है।

"बेटी के हक छीन

अपने बेटे का महल सजा बैठे।।

बोध हुआ अंतिम क्षण

तब तक, बिगड़ा खेल-मेल सारा

तुन -तुन..... इक तारा।।"[67]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अपने साहित्य में स्त्रियों को पुरुष के बराबर अधिकार देने की वकालत की है। आजादी का एहसास उन्हें भी पूरा करने का अधिकार मिलना चाहिए। लेकिन समाज में नारी आज भी दोयम दर्जे की नागरिक बनी हुई है।

नारी का राजनैतिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना प्राचीनकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर राजनैतिक संघर्ष कर रही है इसी दृष्टि की ओर अपनी दृष्टि केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में राजनैतिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के राजनैतिक संघर्ष की पुष्टि इनके काव्य साहित्य में दृष्टिगोचर होती है। जिसके प्रमाण इस प्रकार हैं-

“जान हो तुम 'अफसरशाही' की-

नेताओं की शान हो तुम

अर्धशतक भये विदा दे चुके

अब तक क्यों मेहमान हो तुम ?

आज़ादी का सर्वनाश तुम,

कर देने पर आमादा हो

मार के मंतर 'माँ'

स्तन से दूध निचोड़ा

पर भोली संतानों को तुम,

बन गई स्वयं

'पूतना' मां हो।"[68]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने यहां नारी के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाया है जिसमें नारी राजनीति में आकर पूतना मां बन गई है जो की राजनेता की अनुयायी बन वहां शासन करने के लिए संघर्ष करती है।

"ना दहेज को-

सहमत होगी, क़ौम की, कारा तोड़ेगी

घुट-घुटकर

अब नहीं मरेगी,

मंच पै चढ़कर बोलेगी।

समय और शिक्षा-

ने उसके चिंतन का रुख

मोड़ दिया।

चुप्पा रहना छोड़

दिया, लड़की ने डरना छोड़ दिया।"[69]

अतः यहाँ कवि नारी के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाते हुए कहा है की लडकी ने डरना और चुप रहना छोड़ दिया है। अब उसने संघर्ष करना सीख लिया है

और मंच पर खड़े होकर बोलना सीख लिया है।

स्त्री विषयक कुछ कविताओं में औरत की गुलामी को कुछ यूँ बयाँ किया गया है-

किसी आँख में लहू है,

किसी आँख में पानी है,

औरत की गुलामी भी

एक लम्बी कहानी है.....”[70]

डॉ. बेचैन जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से दलितों की व्यथा-कथा, वेदना और मुफलिसी को ज्यों का त्यों दर्ज करने में सफलता पाई है। इस संकलन की कविताएँ, बिना किसी बदलाव के दलित संस्कृति और दलित जीवन के यथार्थ को सप्रमाण प्रस्तुत करती हैं। जो की नारी के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाती है।

“देह मुझे चिढ़ाती है

पूछती है अर्थ

सेवाएँ हैं व्यर्थ

कुर्सी कुँवारी 'माँ' सी

पैसे की नाज़ायज

सन्तान को देती है बढ़ावा ।

करती है पाकीज़गी का दावा

कुर्सी लगती है

खलनायकों में फँसी सचरित्रा।“[71]

अतः यहाँ कवि ने अपने काव्य में नारी के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाया है इन पंक्तियों में नारी राजनैतिक कुर्सी के लिए संघर्ष करती हुई नजर आ रही है और वह अपनी संतान को निरंतर बढ़ावा देती है।

"जिस भी

निकाय में

होगा आरक्षण

उसकी हर

चीज़ निजी

क्षेत्र में देकर,

अपनी जाति

बिरादरी के

नाम कर दी जायेगी।

प्रेम दलित से,

कर लेगी तो

बेटी भी जान से जायेगी।"[72]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने यहाँ नारी के राजनैतिक संघर्ष को प्रस्तुत किया है जिसमें वह अपनी इस रचना में जात-पात एवं बिरादरी के लिए संघर्ष करती हुई नारी को प्रस्तुत किया है ।

-: श्यौराज सिंह बेचैन की कहानियों में नारी संघर्ष :-

नारी का पारिवारिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो कि परिवार में निरंतर संघर्ष कर रही है इसी दृष्टि की ओर ध्यान केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में पारिवारिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के पारिवारिक संघर्ष की पुष्टि उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। जिसके पुष्टि इस प्रकार है:-

"अशोक चला गया, एक बेटा और चार बेटियाँ छोड़ कर। बच्चों की दादी कलावती आज बूढ़ी है, पर उसकी जवानी का भी क्या हुआ ! जब वह विधवा हुई थी तब दोनों बेटे नादान थे। उस जवान स्त्री ने पति के बग़ैर कैसे चालीस साल गुज़ारे थे, कैसे बच्चे पाले थे, कौन जानता है? वह नहीं सह सकी रमेश- की मौत के बाद दूसरे बेटे की मौत का सदमा, वह असहाय तो पहले ही थी, इस मौत ने उसे और तोड़ कर रख दिया था। कब तक जीती बेचारी ! घर में कोई बड़ा कमाने वाला नहीं। ऊपर से खाने वाले अनेक। पति और बेटों की दर्दनाक मौतों का सदमा-दर-सदमा सह रही माँ के लिए अब अपनी भी मौत का बुलावा था, सो वह भी चल बसी।"[73]

बेचैन जी इस कहानी में नारी के पारिवारिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि यहाँ एक नारी अपने परिवार के लिए संघर्ष करती हुई नजर आती है जो अपने पति के मर जाने के बाद परिवार का पालन पोषण अकेले करती है और साथ ही पति और बेटे की मृत्यु को भी सहन करती है तथा परिवार के लिए संघर्ष करती हुई मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

"देखो भई, मैं स्त्री हूँ। स्त्री का दु: ख समझती हूँ। भोरवती दलित जाति की थी, इसलिए उसकी चिन्ता न किया जाये या उसकी जान की क़ीमत पर राजनीति की जाये उसके अस्मिता विरोधी कुतर्क मेरे गले नहीं उतरे। यह अनेक जातियों का देश है।"[74]

बेचैन जी इस कहानी में नारी के पारिवारिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि यहाँ एक नारी अपने परिवार के लिए संघर्ष करती हुई नजर आती है। यहां स्त्री शोषण का घोर विरोध अपने पारिवारिक लोगों से करती हुई दिखाई देती है

नारी का सामाजिक संघर्ष:-

श्यौराज सिंह बेचैन की कहानीयों में महिलाओं को बहुत सारे संघर्ष करने पड़ते हैं उसमें भी सामाजिक संघर्ष बहुत बड़ी चुनौतीपूर्ण माना जाता है। उनकी कहानियों में ऐसे प्रसंगों का वर्णन किया जाएगा जहाँ नारी संघर्ष अद्वितीय है।

"स्कूल में जब वह गाती थी तो श्रोताओं का मन मोह लेती थी। इसके विपरीत प्रभाव यह था कि कई दबंग जातियों के बिगड़ैल लड़के उससे दोस्ती की आड़ में उसका शोषण करना चाहते थे। पिता को यह ख़बर ख़ुशी नहीं देती थी। गाँव वालों को लड़की-लड़कों की दोस्ती स्वीकार्य नहीं थी। इसलिए पिता यथाशीघ्र उसकी शादी कर भावी बदनामी की आशंका से बचना चाहता था, परन्तु उसके पास दहेज के रूप में देने के लिए कोई जमा पूँजी नहीं थी। ऐसे में बलाधीन से ब्याह रचा देने का मन बनाते हुए उसने अपनी पत्नी से परामर्श किया था, तो उसने कहा था, “थोड़ो कछु उमर-वुमर को हू ख्याल कर लेते। लाडो बिटिया अब ही पूरी सोलह साल की हू नाँई भई है और चौधरी बलाधीन पचास से तो ऊपर के होवेंगे ही। धन-दौलत कूँ का चाटैगी जे?"[75]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने इस कहानी में नारी के सामाजिक संघर्ष को दर्शाया है जिसमें नारी समाज से संघर्ष करती हुई नजर आती है। एक तो मां के रूप में और एक बेटी के रूप में मां समाज में घूम रहे बुरी विचारधारा के लोग से परेशान होकर अपने बेटी की शादी जल्दी कर देना चाहती है। इस पर उसका पति अपनी बेटी के लिए दहेज ना होने के कारण एक 50वर्ष के आदमी से अपनी बेटी के लिए शादी का सुझाव देता है।

"चौधरी तो जाके बाप की उमरि तेंऊ बड़ौ होइगो । जे राजपूत तो औरतिन कू जमदूत हैं। इन्ने बड़ी बेकदरी कर रखी है घरवारिनु की। थोड़े दिन खिलौना - गुड़िया बनाइकें खेलत हैं, फिर दूसरी तीसरी देखत हैं। नैंक

कद-काठी की उन्नीस भई तो त्याग दई, तनिक कारी चमड़ी देखी तो धकेल दई। बालक नाँइ भए तो छोड़ दई, बालकनुँ में हूँ लड़का पैदा नांइ करे तो मानो पत्थर पैदा करि दए। उतने में मन नाइ भरतु तो पास-पड़ोस में ताक झाँक करें हैं। रही गयी बात ब्याहता की, तो चौधराइन बननो तो घूरे की कुतिया बनने जैसो होइ जावे है, औरतिनु की आजादी तो भंगी-चमारनु में होवे है, वे जाने हैं बहू-बेटिनु की कद्र करनों। सो उन्हें अछूत बनाइ रखो है। बेचारिनु की घर-जमीनिनु पै जे विदेशी हमलावरनु की तरह कब्जा कर लेवे हैं। इनके यहाँ तो औरत से गैया-भैंसिया सौ गुना अच्छी हैं। ये औरत जात की कदर काहे करेंगे ! मरिजाइ तो दूसरी तीसरी और दान-दहेज के नाम पर बाके माँ-बाप के घर दिन दहाड़े डाको डारि लूट-खसोट लावें हैं ।"[76]

यहाँ लेखक ने नारी के सामाजिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि नारी की दशा ऐसी हो गई है समाज में जो बड़ी जात वाले हैं। इन्होंने नारी की बेकद्री की हुई है लड़कियों को खिलौना बना के खेलते हैं, अगर कद थोड़ा भी छोटा या बड़ा हुआ तो त्याग देते है, थोड़ी सी भी काली हुई तो धकेल दी गई, बच्चे नहीं हुए तो छोड़ दी और बेटा पैदा नहीं किया तो मानो पत्थर पैदा कर दिया हो। इस तरह के संघर्ष से नारी समाज में पीड़ित रहती है।

"गाँव भर में कानाफूसी हो रही थी, मैंने 'जयदेई' को सुना था। वह कहती घूम रही थी कि—'सरकार ने इनका पुनर्वास कराया है। ससुर और बहू: बस्स दो प्राणी हैं। दोनों जवान हैं। एक आग और दूसरा फूँस है। कौन जाने दोनों कैसे रहते हैं?' परन्तु दाताराम बड़ी आत्मीयता और सूझ-बूझ के साथ बहू से कह रहा था-"सरवती सुनो, तुम अभी तीस की हो, तुम तो असल में हुई ही अब हो विवाह के लायक, तुम्हें अभी अपने जीवन की लम्बी यात्रा तय करनी है।" सरवती सुन कर उठी और पल्लू से आँसू पोंछती हुई उसारे के बाहर जा बैठी। दाताराम उसके दुख को समझ रहा था। इसलिए वह कुछ देर यूँ ही शान्त बैठा सोचता रहा। दोनों की निःशब्द उपस्थिति ने घर को नीरवता से भर दिया था। आख़िर सरवती ने ही पहल की, मौन तोड़ा और दाताराम के पास जा कर खड़ी हो गयी। सिर से पल्लू खिसकाते हुए धीमे स्वर में बोली- "कहाँ जाऊं मैं? मेरा रास्ता, मेरी मंजिल बताइये मुझे, मैं आँखें मूंद कर चल पड़ूँगी।"[77]

लेखक ने अपनी 'आग और फूँस' की उपर्युक्त पंक्तियों में नारी के सामाजिक संघर्ष को दर्शाया है जिसमें नारी की लाचार परिस्थिति को प्रस्तुत किया है अर्थात् यहाँ सरवती अपने पति के गुजर जाने के बाद नि:सहाय हो गई है और समाज में रहकर असामाजिक लोगों से जूझ रही है।

"मैं जानता हूँ, बेशक तुम चल पड़ोगी सरवती। पर अकेली चलोगी तो रास्ते ही खा जायेंगे तुम्हें। और हाँ, अपने पाँव बढ़ाओ तो माता-पिता की ओर भी तो रुख़ कर सकती हो तुम!" कहकर दाताराम ख़ामोश बैठा सिर पर हाथ रखकर सोचने लगा कि क्या कहीं कुछ ग़लत कह दिया है मैंने! पर सरवती ने साफ-साफ कहा... "नहीं, वे अब मुझे नहीं अपनायेंगे? क्या आप नहीं जानते कि मैं जिस उच्च संस्कारी कुलीन ब्राह्मण परिवार में जन्मी हूँ, वहाँ बेटी ब्याह के बाद बेदखल हो जाती है। धन-सम्पत्ति पर बेटों का ही एकाधिकार होता है। जिस घर में वह व्याह कर प्रवेश पाती है, उस घर से उसकी अर्थी ही वापस निकाली जाती है, और फिर प्रेम-विवाह वह भी ग़ैर जाति में करने वाली लड़की; वह तो सात जन्म भी स्वीकार नहीं की जाती। यह परम्परा है। अघोषित सामाजिक कानून है, जिसका वे स्वाभाविक पालन करते हैं। इसी परिधि के भीतर वे जीते-मरते हैं। इसलिए वे मुझे क्यों अपनायेंगे?" सरवती ने गहरी साँस छोड़ते हुए कहा।"[78]

यहाँ लेखक ने नारी के सामाजिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि नारी समाज में निरंतर संघर्ष कर रही है। यहाँ सरवती अपने संघर्ष को दाताराम से व्यक्त करते हुए बताती है कि मेरे परिवार के लोग मुझे नहीं अपनाएंगे क्योंकि जिस परिवार में मेरा जन्म हुआ है वहां बेटियां शादी के बाद घर से बेदखल कर दी जाती हैं। सारी धन सम्पदा पर केवल पुत्र का एकाधिकार होता है। और प्रेम विवाह करने पर तो सात जन्मों तक नहीं अपनाते।

"अभी महीना पूरा भी नहीं हुआ था कि सूतो चौधरिन ने रुक्खो को तऱक्की दे दी। बर्तन, झाड़ू-पोंछे के साथ-साथ उससे एक वक़्त का खाना भी बनवाना शुरू कर दिया और पगार डेढ़ हजार से बढ़ाकर पूरी ढाई हजार कर दी। रुक्खो का खर्चा ही क्या था, एक बेटा और खुद वह-कुल दो प्राणी । रुक्खो से पहले यहाँ से कई कामवालियाँ निकाल दी गयी थीं, उनमें कई कमियाँ भी थीं पर निकाले जाने की ख़ास वजहें थीं उनकी जातियाँ । सूतो

खोद-खोद कर उनकी जाति पूछ लिया करती थी। उसकी इच्छा और अपेक्षा होती थी कि उसके यहाँ काम करने वाली कोई ऊँची जाति की हो बाभनी के बनैनी नहीं तो कम-से-कम शुद्र-ओबीसी हो, कोई अछूत । तो उसके बर्तनों को हाथ न लगाये पर उसकी गुप्त जाँच में सबकी सब कथित नीची जाति की ही निकलती थीं। ऐसे में उन्हें हटाना पड़ता था। वैसी स्थिति में जब ख़ुद ही काम करना पड़ता तो देह को कष्ट होता था । मर्दों को तो घर के कामों में हाथ बँटाने की न आदत थी और न मानसिकता।"[79]

यहाँ श्यौराज सिंह बेचैन ने नारी के सामाजिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि नारी की दशा ऐसी हो गई है की जात-पात के आधार पर भी काम पर रखा और हटाया जाता था। इस कहानी की पात्र चौधरिन छोटी जात वाली औरतों को अपने घर में काम पर से हटा दिया करती थी और उनके अछूत होने की वजह से दुर्व्यवहार करती थी।

"कलावती को लगा प्रधान को पेंशन-वेंशन देने में कोई रुचि नहीं है। इसलिए वह तहसील जाएगी और किसी बड़े अफ़सर से बात करेगी। जब घर आई तो पता चला कि रामभज लोध के बेटे ने उसकी बेटी पर बुरी नज़र डाली है। उसने बिरादरी के चौधरी से कहा, "मैं विधवा हूँ। मेरे बच्चे छोटे हैं। मेरे साथ कोई मर्द नहीं है तो क्या ये दबंग लोग मेरे बच्चों को जीने नहीं देंगे ?"[80]

यहाँ लेखक ने नारी के सामाजिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि नारी की दशा ऐसी हो गई है की समाज में उसके बच्चों पर भी बड़ी जात के दबंग लोग बुरी नजर रखते हैं। यहाँ कलावती समाज से संघर्ष करती हुई नजर आती है और अपने बच्चों के लिए चौधरी के समक्ष शिकायत के लिए खड़ी हो जाती है।

उनके जाने के चार-पांच घंटे बाद ही लाडो को प्रसूति के दर्द होने शुरू हो गये। लाडो ने तड़पते हुए लक्ष्मी से कहा- "दीदी, बच्चू को बुला दो, मैं उससे कहूँगी कि वह जल्दी से तुम्हारे भैया को वापस बुला लाए और तब तक किसी तरह मुझे अस्पताल पहुँचा दिया जाए।" लाडो की माँ की उम्र की ननद ने कहा, "धीरज धरो भाभी, मैं जानती हूँ कि पहली प्रसूति में पीड़ा बहुत होती है। मन मज़बूत रखो, मैं कुछ करती हूँ।"[81]

प्रस्तुत प्रसंग 'घूंघट हटा था क्या?' के माध्यम से श्यौराज सिंह बेचैन यह बताना चाहते हैं कि सवर्ण समाज में महिलाओं की स्थिति कितनी दयनीय बनी है। बलाधीन तीर्थ यात्रा के लिए हरिद्वार चला जाता है। जाने के ठीक बाद ही लाडो को प्रसव पीड़ा शुरू हो जाती है। मर्द की अनुपस्थिति के कारण लाडो दर्द के कारण तड़पकर मर जाती है। ऐसी स्थिति दलित समाज में नहीं पाई जाती है। वहां महिलाओं को विवाह तलाक और पुनर्विवाह के अवसर मिलते रहते हैं जो पुरुष को प्राप्त है।

नारी का आर्थिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना प्राचीनकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर आर्थिक रुप से संघर्ष कर रही है इसी दृष्टि को केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में आर्थिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के आर्थिक संघर्ष की पुष्टि उनकी कहानियों में दिखाई देती है। जिसके प्रमाण इस प्रकार है:-

"सरवती ने स्कूल और घर के बीच बचे समय का सदुपयोग करने के उद्देश्य से ग़रीब बस्ती के किनारे खाली पड़ी ज़मीन पर पेड़ों के नीचे एक निःशुल्क शिक्षा केन्द्र बना लिया है। उसने दो-तीन सेवानिवृत्त शिक्षिकाओं को भी अपने साथ जोड़ लिया है। 'ज्ञान-दान' का बोर्ड लगा कर वह अत्यन निर्धनों, अछूतों और अल्पसंख्यकों के बच्चों को तालीम दे रही है। उसके स्कूल में बालश्रमिक और बेसहारा बच्चे पढ़ने आते हैं। वह अब सरकार से भी सहायता माँग रही है। इस वर्ष उसके तीन छात्र हैं जिनमें एक दलित, एक मुस्लिम और एक हिन्दू नियमित स्कूल में पहुँच गये हैं।"[82]

अतः यहाँ श्यौराज सिंह बेचैन ने नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि यहाँ सरवती ने एक निशुल्क शिक्षा केन्द्र खोल लिया है जिसमें वह गरीब बच्चों को अपनी सेवानिवृत शिक्षिकाओं के साथ मिलकर शिक्षा देती है जिसके लिए वह सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करती हुई प्रतीत होती है ताकि सभी विद्यार्थियों को और अच्छी शिक्षा दे सके।

"मैं तो पहले ही कह रही थी कि बच्चे को काम पर साथ मत लाया कर। गिरगिरा गया होगा या कुछ झुग्गी से ही चोट लगा लाया होगा। बच्चों का कुछ पता नहीं चलता। तुम बच्चों को पालती ही कहाँ हो, वे तो पल जाते हैं। ले पाँच सौ रुपया ले जा, कहीं दिखा ले किसी वैद-हकीम को, डॉक्टर तो ज़्यादा माँगेगा।"[83]

श्यौराज सिंह बेचैन ने यहाँ नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि इन पंक्तियो में एक मजदूरी करती हुई औरत अपने बच्चों के पालन पोषण के लिए मजदूरों वाला काम करती है ताकि वो अपने बच्चों को भोजन दे सके, जिसकी वजह से उसे अपने बच्चों को अपने साथ काम पर लाना पड़ता है और चोट लगने पर मालिक की डाँट भी सुनने को मिलती है।

"अभी एक सदमा सह नहीं पाई तब तक कलावती को खबर मिली कि दूसरी बेटी निहालदेई का पति पूरी तरह पागल हो गया है। मतलब वह अर्धविक्षिप्त तो तब भी था जब उसकी शादी हुई थी। निहालदेई तब मुश्किल से तेरह साल की थी। कलावती के पास उसके विवाह के लिए कोई पाई-पैसा नहीं था। बिना दहेज़- लगेज के तो ऐसा ही वर मिलता है। मध्यस्थ ने समझा-बुझा कर शादी करा दी थी। अब जब वह पूरी तरह पागल हो गया और कुंभ का स्नान करने गया फिर वापस नहीं लौटा। रोती, सिर पीटती निहालदेई घर आई। उसकी दशा देखकर कलावती कई दिनों तक सदमे से उबर नहीं पाई। वह अपने वैधव्य से जितनी टूटती थी, बेटियों को विधवा होते देख तो वह बिखर जाने के कगार पर पहुँच गयी थी।"[84]

बेचैन जी ने यहाँ नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि इन पंक्तियो में कलावती की बेटी निहालदेई का पति पूरी तरह पागल हो गया और कुंभ से कही चला गया घर वापस नहीं आया। यहाँ निहालदेई अपनी कम उमर में इतना संघर्ष करती हुई प्रतीत हो रही है और कलावती के पास इतना धन नहीं की वो जगह जगह जाकर दामाद को खोजे।

"अब तो मेरे पास मेरे स्वामी मेरे हमसफर, मेरे हमदर्द, मेरे पति भी नहीं हैं। अब क्या बचा है, मेरे पास बेटे के घर में लौटने के लिए? मैंने ही सब तरह की कंजूसी कर वह घर बनाया था। न कुछ लजीज खाया और न

यहाँ कोई अजीज रह पाया। न कुछ अच्छा पहना, न कुछ सभा सोसायटी को दान-धर्म में लगाया। बस जोड़ने-जोड़ने की धून सवार रही। ईसाई हुए होते तो सोचते जरूरत से ज्यादा धन जोड़ना पाप है। वैसे हम धनी भी कहीं के थे, न कोई फैक्ट्री, न मिल, न कोई फाउण्डेशन और न कोई निजी स्कूल। गैर-कौम के मुकाबिले तो हम गरीब ही थे। अब वहाँ मेरा कुछ नहीं है।"[85]

प्रस्तुत कहानी के द्वारा नारी के आर्थिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से लेखक ने कहा है कि इन पंक्तियो में नारी अपनी व्यथा सुनते हुए अपने आर्थिक संघर्ष को बता रही है की उसने कितनी कंजूसी कर-करके ये घर बनवाया जिसकी वजह से वो ना तो अच्छा कुछ कर पाई, ना ही अच्छा खा पाई और न ही समाज में दान धर्म कर पाई।

नारी का शैक्षिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना भूतकाल से ही चलता चला आ रहा है जो की समाज में निरंतर शिक्षा के लिए संघर्ष कर रही है उस दृष्टि पर अपनी दृष्टि केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में शैक्षिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के शैक्षिक संघर्ष की पुष्टि उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। जिसके उदाहरण इस प्रकार है:-

"बच्चू स्वयं भी संगीत प्रिय स्वभाव का किशोर था। हालांकि न उसके पास वाद्ययन्त्र थे, और न कोई प्रशिक्षण। पर प्रकृतिदत्त कला अवश्य थी, जो उसके कण्ठ से अक्सर फूटती रहती थी। उसी तरह 'लाडो' गाती थी। चन्दा से बतियाती थी, तारों को पास बुलाती थी। पर घूंघट नहीं उठाती थी। पढ़ने-लिखने के अन्तराल में तितली-सी उड़ जाती थी। स्कूल में वह दसवीं में ही गायन प्रतियोगिता जीती थी। यह उसकी पर्सनैलिटी का सच बच्चू के सपने में कैसे आया? वह सोच ही रहा था कि उसी क्षण बस के आगे ट्रक आ गया। चालक ने ज़ोर से ब्रेक मारी, कई यात्रियों के सिर सामने की सीटों से टकराये। एक यात्री गाली देता हुआ चिल्लाया। तेरी... साले ड्राइविंग कर रहा है या कुटाई कर रहा है। हरिद्वार पहुँचायेगा या सीधा स्वर्गधाम ? बच्चू ने झटका क्या खाया कि सपने वाला ख़ज़ाना ही गँवा दिया। वह भड़भड़ा कर

उठा और सावधान हो कर सीट पर बैठ गया। 'अब हम हरिद्वार पहुँच रहे हैं' परिचालक ने प्रसन्नता के स्वर में समाचार दिया।"[86]

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने नारी के शैक्षिक संघर्ष को दर्शाते हुए कहा है कि यहाँ नारी पढ़ना लिखना तो चाहती है परंतु उसके लिए उसे कई जतन करने पड़ते हैं घूंघट करना पड़ता है। फीस की व्यवस्था, आने जाने की, समुदाय की आंखे भी उसे काटने को दौड़ती है। कभी कभी तो सवर्ण वर्ग के लड़के रास्ता ही रोक लेते हैं। इन सभी संघर्षों के बाद अध्यापकों का व्यवहार तो उससे भी बुरा रहता है जो बात बात में जाति सूचक शब्दों से अपमानित करते हैं।

"लवली की एक सोशल वर्कर फ्रैंड सपना मिश्रा जो कक्षा आठ से दसवीं तक उसको क्लास फ़ैलो रही थी, उसने एक हिन्दी आलोचक पर साहित्य सभा में एतराज दर्ज कर दिया। उसका कहना था कि आलोचक ने उसकी तुलना रीतिकाल की नायिका से की है। उसे रति की मूर्ति कहा है। उसने उसे साहित्य पढ़ाने के बहाने अश्लील संवाद शुरू किया। नव वर्ष के शुभकामना मैसेज के बहाने शेख रंगरेजन संवाद की रीतिकालीन कवि की पंक्तियां लिखीं।"[87]

बेचैन जी इस कहानी के द्वारा नारी के शैक्षिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कह रहें है कि एक साहित्य सभा में वह सपना मिश्रा की आलोचना करते हुए उसे रीतिकाल की नारी से तुलना करते है जिसका विरोध सपना उसी समय करती है।

कुछ देर बाद पुनीता मलिका खाटिक के पास गयी- "क्या तुम्हारी तरह इंटरव्यू देने सुबह ही आ बैठती ? क्या, जे. एन. यू. या ए. एम. यू. से पीएच. डी. कर लेने और दस बीस शोध पत्र प्रकाशित कराने का रौब रखने, थीसिस छपवा लेने से कॉलेज में नौकरी मिलने की गारण्टी हो जाती है? होने वालों का सलैक्शन देर से आने पर भी होता है। पीएच.डी. वाले से पहले एम. ए. पास का होता है। फस्ट क्लाश को छोड़ थर्ड क्लास की नियुक्ति होती है। बिना 'नेट' और बिना पीएच.डी. के भी एडहॉक करते हैं। पाँच-पाँच साल। यह गडस की बात है। आखिर सब यह तो एक्सपर्ट और कॉलेज चेयरमैन की दृष्टि पर निर्भर करता है मैडम, समझी?" पुनीता ने मजबूत आवाज में कहा तो सब की सब झेंप गई। यूँ भी पुनीता सेहत से भारी भरकम थी। उसके चेहरे पर कांति थी। खुशी थी। भारी उत्साह भरा रौबीला व्यक्तित्व था उसका। सो साक्षात्कार

दात्रियाँ। सब की सब उसी को लेकर अलग-अलग चुप-चुप बतिया रहीं थीं- “अब तो अपनी बिरादरी में भी खाते-पीते अभिजात्य परिवार हो गए लगते हैं। अब ज्ञान के क्षेत्रों में भी हमारे प्रतिनिधि पूरी संख्या में आ सकेंगे। पर ये लगती तो नहीं कि एस. सी. ही हैं।"[88]

बेचैन जी ने इस कहानी में नारी के शैक्षिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि पुनीता के शिक्षा प्राप्त कर लेने तथा पी-एचडी पूरी कर लेने और दस - बीस लेख प्रकाशित करवा लेने से भी नौकरी मिलने की गारंटी नहीं मिल जाती कि वह नौकरी पा ही जाएगी। उसके बाद भी दलित नारी को अधिक परिश्रम करने पड़ते हैं।

प्रातः कालीन क्रियाओं से फारिक होकर दोनों ने एक साथ मेस में चाय नाश्ता लिया, और रूम में आकर अर्चना ने रीना को विशेष गम्भीर समस्या में फंसा देखकर कहा- "मैं आज अपनी क्लास मिस किए देती हूँ। तू डिटेल में सब कुछ सच-सच बता... तेरे साथ हुआ क्या है? तू रात कहाँ से आई थी? अकेली थी या तुझे कोई छोड़ने आया था और यह भ्रम तू पूरी तरह दिमाग से निकाल दें कि हर स्त्री, हर पुरुष के लिए भोग्य वस्तु है। हाँ, हम एस. सी. छात्राओं की विशेष समस्याएँ हैं और वे इसलिए ज्यादा गंभीर हैं, क्योंकि हमारे वर्ग से पूरे स्टूडैंट्स हायर स्टडी में नहीं है और अध्यापक तो नाम लेने के लिए भी नहीं हैं उच्च शिक्षा में हम अल्पसंख्यक हैं इस कारण कुछ छात्र और अध्यापक दबे स्वर में बदतमीजी से पेश आते हैं। लड़की बोल्ड न हो तो मर्यादा से आगे बढ़ जाते हैं। परन्तु जबरदस्ती कोई नहीं कर सकता। मुझे लगता है तेरे साथ भी निश्चित तौर पर ऐसा कुछ अवांछित प्रसंग घटित हुआ है। पर तू बताएगी नहीं तो समस्या का समाधान कैसे होगा?”[89]

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने इस कहानी में नारी के शैक्षिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि यहाँ एक नीची जाति की छात्रा के साथ शिक्षा प्राप्त करते हुए कैसे - कैसे संघर्ष करने पड़ते हैं तथा दो छात्राओं के बीच यहाँ वार्तालाप को दर्शाया गया है जिसमें एक नारी पात्र के साथ एक अध्यापक द्वारा अवांछित घटना घटी है जिससे वह घबराई सी है इस तरह से शिक्षा के क्षेत्र में भी नारी को संघर्ष करना पड़ता है। अगर शिष्य या शिष्या दलित समाज से हो तो समस्या ज्यादा बढ़ जाती है। प्रो. प्रताप जैसे अध्यापकों की समाज में कमी नहीं है।

सरवती सुनकर हतप्रभ थी तो व्यवसायी लोग तथा धर्म उत्थान समिति के लोग सलाह के नाम पर दबाव डाल रहे थे कि कमीनों- कुत्तों में स्कूल खोलने की कोई जरूरत नहीं है। सरवती जोर देकर कह रही थी कि- "मैं तुम्हारी बे सिर -पैर की सलाह नहीं मान पाऊंगी। मैं जानती हूँ कि देश की सेवा जहाँ तुलसी ने की, है वही कबीर, रैदास ने भी की है, चोखा मेला और नन्दनार ने भी की है, रसखान और रहमान ने भी की है। आज़ादी की रक्षा पण्डित नेहरू ने, गांधी ने की है, तो डॉ. अंबेडकर ने भी की है। देश सबका है। गरीबों, अछूतों को भी अपने देश की सेवा करने का पूरा हक है। हमारा फ़र्ज़ है कि इन बच्चों को तालीम दें, संस्कार दें और अपना कर्तव्य पूरा करें। उन्हें मजबूर, मजलूम और मुजरिम बनने को अनपढ़ और असत्य कतई न छोड़े।"[90]

प्रस्तुत प्रसंग में बेचैन जी ने ज्योतिबा फुले एवं सावित्री बाई फुले के योगदान को याद किया है। उसी मार्ग पर चलकर दाताराम और सरवती का योगदान गरीब, निर्धन लोगों के जीवन में उजाला लाने के लिए विद्या दान विद्यालय को शुरू किया तो सवर्ण समुदाय द्वारा उसे बन्द करने के लिए उसमें आग लगा दिया जाता है।

"मैं बराबर रूस, चीन, क्यूबा आदि देशों में जाता रहा हूँ। इस बीच इसे सलाह भी नहीं दे पाया और यह धीरेधीरे बारह पास करा ले- गया अपनी लड़की को। स्कूल कॉलेज सब हमारे हैं ही। सो हमारे नौकर की बेटी मानकर टीचर्स का व्यवहार भी कुछ पॉजिटिव बना रहा होगा। नहीं तो ज्यादातर चमार-भंगिया के बच्चों को तो शिक्षक ही स्कूल- कॉलेज से डरा धमका कर भगा देते हैं।"[91]

प्रस्तुत प्रसंग में राय साहब कहते हैं कि मेरे विदेश यात्रा के दौरान मेरे कॉलेज के लोगों द्वारा मेरे नौकर होने की वजह से पढ़ने और बढ़ने का अवसर मिला और वह पढ़ कर कहीं किसी सवर्ण लडके के साथ भाग गई होगी। तुम मेरे नौकर न होता तो स्कूल से धक्के मार कर भगा दिया जाता।

"माधवी ने फिर से सवाल किया, तो राय साहब तिलमिला कर मिलाकर बोले, इसलिए कि अम्बेडकर एक अछूत होकर भी यदि पढ़ा था तो वह जमाना अंग्रेजों का था। ईसाई मिशनरी अछूतों को पढ़ाने पर बल दे रहे थे और इसी के साथ वे इन गैर-हिंदू अछूतों को ईसाई धर्म में दीक्षित भी कर रहे थे। किंतु

अब देश आज़ाद है। स्वराज: यानी हमारा राज है। क्या आपके स्वराज में दलितों को अंग्रेजी राज जितनी भी आज़ादी नहीं मिलेगी, जबकि संविधान तो सबको समानता का अधिकार देता है? माधवी ने चिंता जताई।"[92]

प्रस्तुत प्रसंग में बेचैन जी के द्वारा यह कहा गया है कि यह समय अंग्रेजों के समय से भी कठिन दौर से गुजर रहा है। उस समय की तुलना में इस समाज में बंदिशें कम है इसलिए सभी बराबर है।

नारी का राजनैतिक संघर्ष:-

पूर्व अध्याय में वर्णित नारी की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि नारी के नसीब में संघर्ष करना जन्म से ही चलता चला आ रहा है जो आज भी समाज में निरंतर राजनैतिक संघर्ष कर रही है। इस ओर ध्यान केंद्रित करते हुए बेचैन जी ने अपने साहित्य में राजनैतिक संघर्ष को व्यक्त किया है। नारी के राजनैतिक संघर्ष की पुष्टि उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। जिसके उदाहरण इस प्रकार है:-

"बलाधीन को जाने क्यों पत्नी की उम्र और अपने कुमेल विवाह का एहसास आशंकित कर रहा था। कथित नीची जाति के नौकरों से ऊँची जाति की औरतों के सम्बन्धों के कई प्रसंग उसके संज्ञान में थे। नीची जातियों के नौकरों, सेवकों आदि से ज़मींदारों की स्त्रियों के अक्सर अवैध सम्बन्ध बन जाते थे। ऐसे कई किस्से-कहानियाँ बलाधीन पहले से सुनता आया था इसलिए वह बच्चू को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरत रहा था। बलाधीन के ध्यान से एक वाक्या नहीं उतर रहा था कि किस तरह उसके चाचा कुलराज सिंह ने चाची 'जग्गो' को बाँझ बता कर त्याग दिया था। उसके बाप के घर भी श्यामा चमार जो एक पुश्तैनी नौकर था; उस पर आरोप था कि चाची की उससे सहानुभूति बढ़ गयी थी। दबे-छिपे चाची उससे मिला करती थी। उम्मीद से हुई तो चाचा खुशी-खुशी उसे घर ले आया था। उसकी इच्छा थी सो लड़का ही पैदा हुआ था, वंश चलाने वाला। पर जीवन पर्यन्त वह सन्देह की घुटन में घुटता रहा। दरअसल उसके बेटे की सूरत श्यामा चमार की सूरत से बहुत मिलती-जुलती थी।"[93]

बेचैन जी ने अपनी इस कहानी 'घूँघट हटा था क्या' की इन पंक्तियों में ऊंची जाति की औरतों के संबंधों पर कटाक्ष किया गया है तथा ऊँची जाति के जमीदारों के नीची जाति के नौकरों, सेवकों मजदूरों की औरतों के साथ संबंध थे इस पर आक्षेप किया गया है ऐसे प्रसंग नारी के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाते हैं।

"तुम ही मुजरिम, तुम ही मुंसिफ बन रही हो तो बनो। तुम अपनी मनमर्ज़ी करती हो तो करो, अब तुम मुझसे मिलने क्यों आयी हो?" भाई ने पूछा तो वह कहने लगी, "तुम भी तो अपनी मर्ज़ी के मालिक हो, तुम भी जाति बाहर प्रेम करते हो, शादी करोगे तो क्या तुम्हें घर-बदर कर दिया जायेगा?"[94]

इस कहानी में नारी के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से लेखक ने कहा है कि नारी को यहाँ मुजरिम बताया जा रहा है और बोला जा रहा है की तुम मुंसिफ बन रही हो और मन मर्जी की मालिक हो। वही कार्य अगर लड़का करता है तो उसकी सजा अलग होती है। समाज में ऐसे दोहरे आचरण आज भी हैं।

मूलसिंह की पत्नी मीना पींठ के नीले निशानों को गर्म रूई से सेंक रही थी। वह घूंघट का पल्लू नीचे करते हुए बोली- “मेरी बात तो कोई सुनतुई नांय है। का जरूरत ही गाँव में लीला खेलन की। गाँव बारे कला देखगे, हुनर की तारीफ करंगे पर जाति की तारीफ कौन करेगो सोचा तक नांय।"[95]

बेचैन जी प्रस्तुत कहानी में नारी के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से कहा है कि गांव वाले केवल कलाकार की कला देखेंगे उसके हुनर की तारीफ करेंगे। समाज की सच्चाई यह है कि भारतीय समाज में जाति ही सबसे बड़ी है उसी के कारण मूलसिंह को पीट पीट कर अधमरा कर दिया जाता है ये सभी बाते मूलसिंह की पत्नी समझती है लेकिन मूलसिंह नही समझता है इसलिए वह राजनीति का शिकार हुआ है।

“भाड़ में जाये तुम्हारी भैन जी और चूल्हे में जाई उवा को रैला, बालक भूखे मरि रए हैं और तुम्हें नेतागिरी को नशा चढ़ि रओ है। दुए बैठि गये दस पास करि कें अब सीलमपुर की सड़कन पै बेलदारी करत फिरें हैं,

और तीसरी बेटी लिकारि दई स्कूल तैं। कहाँ से देउँ पिराईवेट स्कूल की मोटी फीस? "तो सरकारी स्कूलों में भेज दें, का बहन जी पब्लिक स्कूल में पढ़ि के मुख्यमंत्री बनीं ?" "सरकारी स्कूलों में मास्टर छटे छमाहे आवे हैं। अपने खेत क्यारन के काम निबटाइ के सुस्तावन-थकन मिटावन कूँ। सो एक मास्टर सौ-दो सौ बालकनु कूँ विचारौ पढ़ावे या भेड़ बकरियनु की तरह रखवाली करे, आजादी मिले कितने दिन होई गये? कछु बदलो है, हमारी जिन्दगी में? का तुम्हारी भैन जी कूँ हमारो हाल-चाल दिखायी देतु है या नांय ?"[96]

इस कहानी में नारी के राजनैतिक संघर्ष को दर्शाते हुए पात्रों के माध्यम से लेखक ने कहा है कि स्त्री अपने पति पर गुस्सा करते हुए बोलती है की घर में खाने पीने को कुछ है नहीं बालक भूखे मर रहे हैं और तुम्हें नेतागिरी करने की लगी है। तुम्हारी बहन को हमारा हाल चाल दिखता है या नहीं। यहां रामकली रामभरोसे को खूब फटकारती है। ऐसे सशक्त पत्रों के द्वारा पुरुषों को संदेश दिया गया है।

निष्कर्ष:– प्रस्तुत अध्याय में प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी संघर्ष के माध्यम से बेचैन जी ने साहित्य में उन महिलाओं के योगदान को भी याद किया है जिनमें त्याग, बलिदान के बाद भारतीय संविधान में महिलाओं की भागीदारी को प्रदान किया गया उस समय डॉ. अंबेडकर के आंदोलन में महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी ली थी आज भी महिलाओं के सफल होने में उन्हों पहले की अपेक्षा ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है अब संघर्ष का दायरा घर परिवार समाज हर जगह उन्हें संघर्ष के बाद ही आगे बढ़ने का रास्ता मिलता है। प्रो. बेचैन की नारी सबसे ज्यादा संघर्षशील दिखाई देती है जो समाज की दशा और दिशा बदलने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है ऐसी साहसी महिलाओं के साहस को प्रो. बेचैन ने अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया है।

1. आत्मकथाओं में जो भी नारी पात्रों का वर्णन किया गया है वे कभी पलायनवादी नहीं बल्कि समस्याओं का डटकर सामना करती हैं।
2. कहानियों में जो महिला पात्र हैं। वे सभी अद्वितीय ऊर्जा से भरी पड़ी हैं कितना भी शोषण होता है वे उसका सामना डटकर करती हैं।

3. शोध प्रबंध जैसी कहानीयां समाज को शिक्षा जगत कि सच्चाइयों से अवगत कराती हैं।

4. शिष्या बहू कहानी में महिला पात्र गुलाबो देवी जिस लड़के से प्रेम करती है उसके लिए कितना अपमान सहती है लेकिन निराश नहीं होती।

5. लवली कहानी के द्वारा यह दिखाया गया है की लड़कियों को प्रेम के छलावे के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

6. सपना मिश्रा के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि महिलाएं पहले जैसी सीधी-साधी नहीं है बल्कि लड़कर न्याय पाने का प्रयास करती हैं।

7. शोध प्रबंध कहानी में अर्चना जैसी साहसी महिलाओं से समाज में जागरूकता आ रही है जिसे दलित महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार करने से पहले लोग सोचने पर मजबूर होते हैं।

8. कीर्ति जैसी पढीपिता के व्यवहार से -लिखी लड़कियों के प्रति माता- वह तंग आकर आत्महत्या के लिए प्रेरित होती है और यथार्थ रूप में आज भी समाज में ऐसी रूढ़ियां पाई जाती हैं।

-: संदर्भ सूची :-

1. द्वारका दास गोयल, समाजशास्त्र के मूल आधार, पृष्ठ संख्या८८-
2. डेविस किंग्सले, Human Society, पृष्ठ संख्या-- ३९७
3. विभूषण डी. आर. सचदेवा, समाजशास्त्र के सिद्धांत,
   पृष्ठ संख्या २८६--
4. वीरेंद्र प्रकाश शर्मा, भारतीय समाज, पृष्ठ संख्या -- १३१
5. डॉ. सत्येंद्र त्रिपाठी, सामाजिक विघटन, पृष्ठ संख्या२०५--
6. संस्कृत हिन्दी कोश, संपा. वामन शिवराम आप्टे-१९८८,
   पृष्ठ संख्या - १०७६
7. संस्कृत - शब्दार्थ कौस्तुभ, संपा. चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा व
   पं तारिणी झा - १९७७, पृष्ठ संख्या - १२२३
8. संस्कृत हिन्दी कोश, संपा. वामन शिवराम आप्टे-१९८८,
   पृष्ठ संख्या - १०७६
9. मानक हिन्दी कोश, संपा. रामचंद्र वर्मा-१९६६, पृष्ठ संख्या -२८५
10. वही पृष्ठ संख्या - २८५
11. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, पृष्ठ संख्या-१७
12. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, पृष्ठ संख्या -२६
13. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, भाई साहब : एक प्रेरक
    पाठ : पृष्ठ संख्या -३९९

14. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, भाई साहब : एक प्रेरक पाठ : पृष्ठ संख्या -३८१
15. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, बड़ी दुनिया में छोटे कदम : पृष्ठ संख्या -- २०४
16. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, पृष्ठ संख्या - १२-१३
17. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर,पृष्ठ संख्या-१५
18. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, पृष्ठ संख्या - २२
19. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, घर? :पृष्ठ संख्या -३९-४०
20. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, भाई साहब : एक प्रेरक पाठ, पृष्ठ संख्या -- ३८४
21. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, भाई साहब : एक प्रेरक पाठ, पृष्ठ संख्या -- ३८४
22. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, बगुला भगती : पृष्ठ संख्या--५०
23. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, पृष्ठ संख्या - २९
24. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, भाई साहब : एक प्रेरक पाठ, पृष्ठ संख्या -- ३४७
25. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, घर?: पृष्ठ संख्या-४२-४३

26. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, बहन माया का ब्याह : पृष्ठ संख्या --१०८-१०९

27. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, बहन माया का ब्याह : पृष्ठ संख्या-१२५

28. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, घर?: पृष्ठ संख्या-४०-४१

29. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, बगुला भगती : पृष्ठ संख्या--५६

30. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, बगुला भगती : पृष्ठ संख्या-६४

31. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, यहाँ एक मोची रहता था, पृष्ठ संख्या -- ३१९

32. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, भाई साब : एक प्रेरक पाठ : पृष्ठ संख्या - ३३६

33. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, भाई साहब : एक प्रेरक पाठ, पृष्ठ संख्या – ३५४

34. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरा बचपन मेरे कन्धो पर, जीवित बचा स्वराज : पृष्ठ संख्या -- १४९

35. वही, पृष्ठ संख्या-५०

36. वही, पृष्ठ संख्या -१२९

37. वही, पृष्ठ संख्या -२२६

38. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता --क्रौंच हूँ मैं: पृष्ठ संख्या-२४

39. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता --क्रौंच हूँ मैं, पृष्ठ संख्या - २५

40. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता --क्रौंच हूँ मैं, पृष्ठ संख्या -- ३६

41. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता --क्रौंच हूँ मैं, पृष्ठ संख्या -- ४१

42. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता --नई फ़सल कुछ अन्य कहानियाँ:
पृष्ठ संख्या--१४९

43.. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--चमार की चाय : पृष्ठ संख्या -- १०६

44. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता -- क्रौंच हूँ मैं: पृष्ठ संख्या-२२

45. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता -- क्रौंच हूँ मैं, पृष्ठ संख्या - ५०-५१

46. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता -- नई फसल कुछ अन्य कविताएँ :
पृष्ठ संख्या -२८

47. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता - क्रौंच हूं मैं, पृष्ठ संख्या -२०

48. श्यौराज सिंह बेचैन--, कविता नई फसल कुछ अन्य कविताएँ :
पृष्ठ संख्या-१२६

49. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता -- चमार की चाय, पृष्ठ संख्या -९९

50. श्यौराज सिंह बेचैन--, कविता चमार की चाय, पृष्ठ
संख्या ९९-

51. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता -- नई फसल कुछ अन्य कविताएँ :
पृष्ठ संख्या-१२७

52. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता-- क्रौंच हूँ मैं, पृष्ठ संख्या - २५

53. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--नई फसल कुछ अन्य कविताएँ:
पृष्ठ संख्या -- ९९
54. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--नई फसल कुछ अन्य कविताएँ:
पृष्ठ संख्या-१०९
55. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--नई फसल कुछ अन्य कविताएँ,
पृष्ठ संख्या-११८
56. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता-- चमार की चाय: पृष्ठ संख्या -५६-५७
57. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता-- क्रौंच हूं मैं: पृष्ठ संख्या- ३६
58. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--चमार की चाय: पृष्ठ संख्या - १४६
59. श्यौराज सिंह बेचैन, भोर के अंधेरे में, लौट आओ (कविता), पृष्ठ
संख्या --१७७
60. श्यौराज सिंह बेचैननई फसल कुछ अन्य कविताएँ,--, कविता
पृष्ठ संख्या४६-
61. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--नई फसल कुछ अन्य कविताएँ,
पृष्ठ संख्या-७८
62. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--नई फसल कुछ अन्य कविताएँ,
पृष्ठ संख्या-७५
63. श्यौराज सिंह बेचैन, भोर के अंधेरे में, लौट आओ (कविता),
पृष्ठ संख्या ९०-
64. श्यौराज सिंह बेचैन, भोर के अंधेरे में, लौट आओ (कविता), पृष्ठ
संख्या --१४०

65. श्यौराज सिंह बेचैन, भोर के अंधेरे में, लौट आओ (कविता), पृष्ठ संख्या --६५

66. श्यौराज सिंह बेचैनचमार की चाय: पृष्ठ --, कविासंख - १०९

67. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--चमार की चाय: पृष्ठ संख्या - ४७

68. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता-- क्रौंच हूँ मैं, पृष्ठ संख्या – ४७

69. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता- क्रौंच हूँ मैं, पृष्ठ संख्या - ४८

70. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता-- नई फसल कुछ अन्य कविताएँ : पृष्ठ संख्या-३८-३९

71. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता--नई फसल कुछ अन्य कविताएँ : पृष्ठ संख्या - ६७

72. श्यौराज सिंह बेचैन, कविता-- चमार की चाय : पृष्ठ संख्या -- १६५

73. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, कार्ड संख्या 2118, पृष्ठ संख्या -- १२८

74. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ठ संख्या--४१

75.. श्यौराज सिंह बेचैन, कहानी संग्रह--हाथ तो उग ही आते हैं, कहानी--घूंघट हटा था क्या?, पृष्ठ संख्या -- १९

76. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, घूंघट हटा था क्या?, पृष्ठ संख्या-२१

77. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, आग और फूंस, पृष्ठ संख्या --९३

78. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, आग और फूंस, पृष्ठ संख्या --९३-९४

79. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ठ संख्या -- १०७

80. श्यौराज सिंह बेचैन, मेरी प्रिय कहानियाँ, कलावती, पृष्ठ संख्या--४१

81. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ठ संख्या--२७

82. श्यौराज सिंह ' बेचैन ', हाथ तो उग ही आते हैं, आग और फूंस, पृष्ठ संख्या --१०४

83. श्यौराज सिंह ' बेचैन ', हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ठ संख्या --११३

84. श्यौराज सिंह ' बेचैन ', मेरी प्रिय कहानियाँ, श्यौराज सिंह ' बेचैन ', कलावती, पृष्ठ संख्या--४३

85. श्यौराज सिंह ' बेचैन ',भरोसे की बहन श्यौराज सिंह बेचैन, ओल्डएज होम- कहानी, पृष्ठ संख्या -- २८

86. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, घूंघट हटा था क्या?, पृष्ठ संख्या-२९

87. श्यौराज सिंह बेचैन,मेरी प्रिय कहानियाँ, पृष्ठ संख्या--९१

88. श्यौराज सिंह बेचैन,भरोसे की बहन:होनहार बच्चे- कहानी, पृष्ठ संख्या -- ४७

89. श्यौराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, शोध प्रबन्ध- कहानी, पृष्ठ संख्या – १०४

90. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ट संख्या--१०५

91. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ट संख्या--६८

92. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, पृष्ट संख्या--७०

93. श्यौराज सिंह 'बेचैन',हाथ तो उग ही आते हैं, घूंघट हटा था क्या?,
पृष्ठ संख्या --२२

94.. श्यौराज सिंह बेचैन, हाथ तो उग ही आते हैं, आग और फूंस,
पृष्ठ संख्या -- ९७

95. श्यौराज सिंह बेचैन,भरोसे की बहन:रावण- कहानी, पृष्ठ संख्या -- ६०

96. भरोसे की बहन श्यौराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन - कहानी,
पृष्ठ संख्या – १३७

*****